हरिभूमि
महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि
रोहतक, रविवार 8 फरवरी 2026

11 जागरूकता रथ को विधायक ने दिखाई हरी झंडी

12 एसडीएम ने शहर में चलाया अतिक्रमण मुक्त अभियान

बाईपास के निर्माण के बाद नारनौल रिंग सर्कल हो जाएगा पूरा

11 गांवों की जमीन होगी इस्तेमाल, 12 किलोमीटर का बनेगा बाईपास
लॉजिस्टिक हब, मेडिकल कॉलेज और ढोसी रोप-वे भी जुड़ेंगे

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने जारी की राष्ट्रीय अधिनियम 1956 (1956 का 48) की धारा 3 के खंड (क) की अधिसूचना

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

अच्छी खबर है। नारनौल शहर के चारों ओर रिंग रोड पूरा होने की आस जगी है। रेवाड़ी रोड सराय सुरानी के पास से जो बाइपास महेंद्रगढ़ रोड होते हुए रघुनाथपुरा-गहली के बीच सिंघाना रोड पर खत्म हो रहा है। उसे बढ़ाकर मांदी नदी के पास बने बाइपास वाले सड़क मार्ग से जोड़ा जाएगा। यह पूरा होने पर नारनौल रिंग रोड पूरा हो जाएगा। इसके बाद शहर के अंदर एंट्री की बजाय बाहरी बाईपास से सिंघाना, महेंद्रगढ़, रेवाड़ी, नांगल चौधरी किसी भी सड़क मार्ग पर बिना ट्रैफिक झंझट में फंसने की बजाय आसानी से चारों ओर पहुंच सकेंगे। यहीं नहीं, करीब 12 किलोमीटर दूरी वाले इस बाइपास के बनने से ढोसी रोप-पे, मेडिकल कॉलेज और लॉजिस्टिक हब भी जुड़ जाएंगे।

मतलब यहां भी आसानी से पहुंचा जा सकेंगा। इस बाईपास के निर्माण की पहल सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने शुरू कर दी है। मंत्रालय ने इसके लिए 11 गांव चिन्हित किए है, जिनकी जमीन इस बाईपास के लिए ली जाएगी। इसके लिए मंत्रालय ने राष्ट्रीय अधिनियम 1956 (1956 का 48) की धारा 3 के खंड (क) की अधिसूचना जारी कर दी है।

भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने विशेष रूप से महेंद्रगढ़ जिले और सामान्यतः हरियाणा में राष्ट्रीय राजमार्गों का एक समृद्ध नेटवर्क प्रदान किया है। यह राज्य के इस पिछड़े क्षेत्र के विकास में काफी मददगार साबित होगा। हालांकि कुछ मध्यवर्ती लिंक जोड़कर इसे ओर बेहतर बनाया जा सकता है, जिससे इसकी उपयोगिता कई मायनों में बढ़ जाएगी। वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर पर नारनौल में एक एकीकृत मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक हब स्थापित किया जा रहा है। एनएचएआई ने इस परियोजना के लिए कनेक्टिविटी प्रदान की है। हालांकि इस परियोजना के आकार और दायरे को देखते हुए इस क्षेत्र में सड़क यातायात की संभावित तीव्रता बहुत अधिक होगी। ऐसे में यातायात के निर्बाध प्रवाह को और सुगत बनाने के लिए नारनौल बाईपास लिंक की बात करें तो एनएचएआई के साथ सीधा संपर्क प्रदान करने के लिए इसे सिंघाना रोड (एनएच 11) पर मौजूदा समापन बिंदु से तलोट गांव के पास लॉजिस्टिक हब तक बढ़ाए जाने की जरूरत महसूस होती है।

नारनौल। सिंघाना रोड पर बने इस बाईपास को आगे 12 किलोमीटर बढ़ाएगा सड़क मंत्रालय। फोटो: हरिभूमि

भाजपा की विकास नीति से जिला बढ़ रहा आगे

इस संबंध में नांगल चौधरी के पूर्व विधायक एवं प्रदेश के पूर्व सिंचाई मंत्री डा. अभयसिंह यादव ने बताया कि इस 12 किलोमीटर बाईपास के निर्माण से जहां नारनौल रिंग पूरा हो जाएगा, वहीं लॉजिस्टिक हब, मेडिकल कॉलेज व ढोसी रोप पे भी इसी बाइपास में कवर होंगे। यह सिंघाना रोड से शुरू होगा। नवंबर 2020 में वह केंद्रीय मंत्री नितिन गड़गरी से मिले थे और तभी से लगातार संबंधित अधिकारियों के भी संपर्क में रहे। बीच में यह कहा गया कि इस बाईपास पर ट्रेफिक तो रहेगा ही नहीं। फिर दोबारा से क्षेत्र की वास्तविक स्थिति और लॉजिस्टक हब, मेडिकल कॉलेज व ढोसी रोप पे जुड़ने से ट्रेफिक होने की सुझाव रखा। दिल्ली विधानसभा चुनाव में भी वह इस संबंध में मिले। अब सड़क और राजमार्ग मंत्रालय ने अधिसूचना जारी कर दी है। जिला में लगातार भाजपा की विकास नीति से जिला आगे बढ़ रहा है, यह बाइपास भी उसी क्रम में जनहित में उठाया कदम है।

मंत्रालय ने यह अधिसूचना की जारी

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय की ओर से जारी अधिसूचना में केंद्रीय सरकार, राष्ट्रीय राजमार्ग अधिनियम 1956 (1956 का 48) की धारा 3 के खंड (क) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए विनिदिष्ट नारनौल बाइपास के 0+000 किमी से 12+000 किमी के एनएच148बी तक के भुखण्ड के संबंध में उक्त राष्ट्रीय राजमार्ग के निर्माण (चौड़ा करने/छह लेन का बनाने, आदि) अनुरक्षण, प्रबंध और प्रचालन हेतु उक्त अधिनियम के अधीन सक्षम प्राधिकारी के कृत्यों का पालन करने के लिए इस अधिसूचना के राजपत्र में सक्षम प्राधिकारी के रूप में प्राधिकृत करती है। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या एनएच148बी के किमी 0 से किमी 12 तक रहेगा। इसमें गांव मकसूसपुर, थाना, रघुनाथपुरा, कुलताजपुर, घाटासेर, बसीरपुर, अमरपुर जोरासी, टहला, मुकुंदपुरा, गहली व कोरियावास शामिल है। मतलब अधिसूचना की धारा 3 के खंड (क) में अभी बाइपास के लिए जिन गांवों की जमीन ली जाएगी, उन 11 गांवों को चिन्हित करने के लिए है। इसके बाद दूसरी अधिसूचना जारी होगी, जिसमें इन 11 गांवों में बाइपास के लिए जिन किसानों की जमीन ली जाएगी, उन किसानों का नाम व जमीन का विवरण का खाका होगा।

खबर संक्षेप

मंडी अटेली। टायरों में लगी आग को बुझाता फायर ब्रिगेड कर्मी।

चलते ट्रक के टायरों में लगी आग

मंडी अटेली। नारनौल-रेवाड़ी रोड नेशनल हाईवे नंबर 11 पर एक चलते ट्रक में टायरों में आग लग गई। राहगीरों और अटेली पुलिस की तत्परता से एक बड़ा हादसा टल गया। जानकारी के अनुसार सायं करीब पांच बजे एक ट्रक नेशनल हाईवे पर नारनौल से रेवाड़ी की तरफ जा रहा था। जैसे ही वह खोड़ के समीप पहुंचा तो उसके ट्रक के टायरों में अचानक आग लग गई। आग लगने के पीछे टायरों का गर्म होना माना जा रहा है। सड़क से गुजर रहे अन्य वाहन चालकों व आसपास के लोगों की मदद से ट्रक चालक ने अटेली पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंची और फायर ब्रिगेड की गाड़ी को मौके पर बुलाकर समय रहते आग पर काबू पाया। इससे एक बड़ी घटना होने से बचाव हो गया।

दुकान से तांबे के तार चोरी, केस दर्ज

महेंद्रगढ़। सतनाली क्षेत्र में अज्ञात चोर एक मोटर रिपेयरिंग की दुकान से तांबे के तार चोरी करके ले गए हैं। पीड़ित दुकानदार ने पुलिस थाने में शिकायत देकर सामान बरामद करने तथा चोर को पकड़ने की मांग की है। दुकानदार धर्मपाल ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि वह सतनाली का रहने वाला है। उसने सतनाली पावर हाऊस के नजदीक धर्म इलेक्ट्रीक नाम से दुकान कर रखी है और वह मोटर रिपेयरिंग का कार्य करता है। सुबह जब अपने घर से आया और अपनी दुकान खोली तो देखा कि दुकान का पीछे का गेट टूटा हुआ था। फिर दुकान में सामान चैक किया तो आठ टरी तांबे के तार व 20 किलो पुराना तांबे का तार गायब था।

पर्यटन स्थल के रूप में शहर को विकसित करने की दिशा में चल रहा कार्य

रोशनी से जगमगाएगा नारनौल का ऐतिहासिक 'जल महल'

- इसमें जल भरने के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग से नारनौल के अधिकारियों को मिल चुकी है अनुमति
- जल महल के अलावा, बीरबल का छत्ता चोर गुबंद एवं अन्य ऐतिहासिक व प्राचीन इमारतों को संजाने-संवारने का चल रहा है कार्य

राजकुमार ⏭ नारनौल

शहर की पहचान माने जाने वाला ऐतिहासिक 'जल महल' आने वाले समय में एक नए और आकर्षक रूप में नजर आएगा। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) ने जल महल के सौंदर्यीकरण और संरक्षण पर विशेष फोकस किया हुआ है। इस दिशा में कई अहम कार्यों को मंजूरी मिल चुकी है, जिनके पूरा होते ही जल महल न केवल दिन में, बल्कि रात के समय भी अपनी भव्यता से लोगों को आकर्षित करेगा।

सौंदर्यीकरण योजना के तहत जल महल के गलियारे में आधुनिक लाइटिंग सिस्टम लगाया जाएगा। इससे शाम ढलते ही जल महल रोशनी से नहाया हुआ दिखाई देगा और इसकी ऐतिहासिक संरचना और भी अधिक निखर कर सामने आएगी।

लाइटिंग इस तरह से की जाएगी कि स्मारक की मूल संरचना को कोई नुकसान न पहुंचे और उसकी ऐतिहासिक पहचान भी बनी रहे और इसकी भव्यता और बढ़ सके। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा किया जा रहा यह प्रयास केवल सौंदर्यकरण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह इतिहास के संरक्षण और संवर्धन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। आधुनिक सुविधाओं और ऐतिहासिक विरासत के संतुलन को ध्यान में रखते हुए कार्य किया जा रहा है, ताकि स्मारकों की आत्मा बनी रहे।

नहरी पानी से भरेगा जल महल

जल महल की सबसे बड़ी खासियत उसका जल से जुड़ा स्वरूप रहा है, जो समय के साथ फीका एवं बंजड़ पड़ गया था। अब इसे दोबारा जीवंत करने की तैयारी है। जल महल को नहरी पानी से भरने की अनुमति भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा दी जा चुकी है। इससे आने वाले दिनों में जल महल का वास्तविक स्वरूप लौटेगा और पर्यटकों को वही दृश्य देखने को मिलेगा, जिसके लिए यह स्मारक जाना जाता है। पानी भरने के बाद जल महल का प्रतिबिंब, उसकी वास्तुकला को और भी मनमोहक बना देगा।

पर्यटकों के लिए कैंटीन की सुविधा

पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से जल महल परिसर में बनी कैंटीन का भी शीघ्र टेंडर किया जाएगा। इसके माध्यम से पर्यटकों को बैठने, हल्का नाश्ता और पेय पदार्थ की सुविधा मिल सकेगी। अधिकारियों का मानना है कि मूलभूत सुविधाएं मिलने से पर्यटक यहां अधिक समय बिताएंगे, जिससे स्थानीय पर्यटन को मजबूती मिलेगी। हालांकि इसमें पूर्व में लाइब्रेरी चालू की गई थी, लेकिन ऐतिहासिक स्मारकों का इतिहास अंग्रेजी भाषा में होने के कारण क्षेत्र में ज्यादा पाठक नहीं मिल पाए और पुस्तकों को पाठक एवं खरीददार नहीं मिलने से लाइब्रेरी सफल नहीं हो पाई।

पचकुइयां व पार्क की दीवारों का काम

पिछले दिनों जल महल के साथ बनी पचकुईयां की दीवार गिरने के बाद उसकी मरम्मत का कार्य पूरा कर लिया गया है। इसके अलावा पार्क में सीआईए रोड की ओर स्थित दीवार को ऊंचा करने का भी प्रस्ताव है, ताकि सुरक्षा के साथ-साथ परिसर की सुंदरता भी बनी रहे। यह कार्य भी सौंदर्यकरण योजना का ही हिस्सा है।

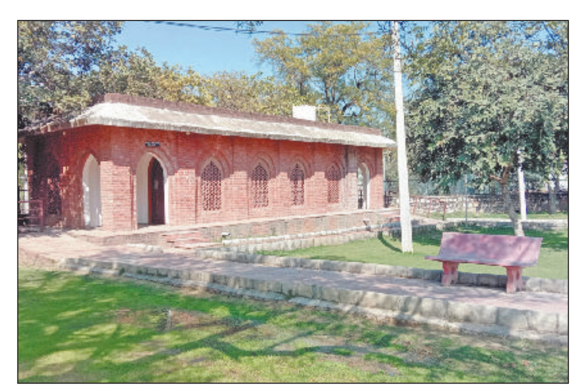
नारनौल। पुरानी मंडी के नजदीक बना जल महल व बनाई गई कैंटीन बिल्डिंग। फोटो: हरिभूमि

नारनौल। जल महल का इतिहास। फोटो: हरिभूमि

स्थानीय लोगों और पर्यटन को मिलेगा लाभ

जल महल सहित अन्य स्मारकों के सौंदर्यकरण से न केवल शहर की पहचान और गौरव बढ़ेगा, बल्कि स्थानीय लोगों को भी रोजगार और व्यवसाय के नए अवसर मिलेंगे। होटल, गाइड, छोटे दुकानदार और परिवहन सेवाओं को भी इससे फायदा होगा। खासकर इतिहास और विरासत में रुचि रखने वाले पर्यटकों के लिए नारनौल एक पसंदीदा गंतव्य बन सकता है। कुल मिलाकर, आने वाले दिनों में नारनौल का जल महल फिर से जमकता-दमकता नजर आएगा। रोशनी, पानी और बेहतर सुविधाओं के साथ यह ऐतिहासिक धरोहर न केवल शहरवासियों के लिए गर्व का विषय बनेगी, बल्कि दूर-दराज से आने वाले पर्यटकों को भी अपनी ओर आकर्षित करेगी।

पूरे शहर के ऐतिहासिक धरोहरों पर काम

नारनौल को एक हेरिटेज टूरिज्म हब के रूप में विकसित करने के लिए केवल जल महल ही नहीं, बल्कि शहर की अन्य ऐतिहासिक और प्राचीन इमारतों पर भी मरम्मत एवं सौंदर्यकरण का कार्य चल रहा है। इनमें प्रमुख रूप से बीरबल के छत्ते, चोर गुंबद, पीर तुर्कमान की बावड़ी इत्यादि शामिल हैं। ये सभी स्मारक मुगल और मध्यकालीन इतिहास की अमूल्य धरोहर हैं। इसके अलावा छोटा-बड़ा तालाब, शाह कुलीखान का मकबरा, इब्राहिम का मकबरा और त्रिपोलिया गेट का भी जीर्णोद्धार किया जा रहा है। इन स्मारकों की संरचनात्मक मजबूती, साफ-सफाई और मूल स्वरूप को बनाए रखते हुए मरम्मत की जा रही है, ताकि आने वाली पीढ़ियां भी इस ऐतिहासिक विरासत को देख सकें।

यह कहते हैं अधिकारी

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की ओर से जल महल को विकसित किया जा रहा है। जल महल के अलावा शहर के प्राचीन स्मारकों पर मरम्मत का कार्य चल रहा है। सरकार की योजना शहर को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की योजना है, ताकि यहां पर न केवल पर्यटक बढ़ें, बल्कि रोजगार के अवसर भी विकसित हो सकें। इसमें आमजन से जागरूक बनने एवं सहयोग की जरूरत है।
-अमित कुमार, कंजरवेशन एसिस्टेंट आर्कोलोजिकल सर्वे आफ इंडिया, नारनौल

नीलगाय को बचाने के प्रयास में कैंपर गाड़ी पलटी, चालक की मौत

- गाड़ी में सवार कुल चार युवकों में से दो घायलों को हायर सेंटर रेफर किया, एक सुरक्षित बचा
- कनीना-अटेली मार्ग पर पडतल के समीप घटित हुआ हादसा

हरिभूमि न्यूज ⏭ कनीना

कनीना-अटेली सड़क मार्ग पर पडतल गांव के समीप बीती रात्रि घटित सडक हादसे में एक युवक की मौत हो गई। जिसकी पहचान चेलावास वासी नीरज 25 वर्ष के रूप में हुई है। इस बारे में चेलावास निवासी संदीप ने कनीना सदर थाना पुलिस को दी शिकायत में बताया कि शुक्रवार सायं करीब साढ़े छह बजे नीरज, आशीष उर्फ तरुण, कौशल व देवेंद्र वासीयान चेलावास कैंपर गाड़ी में सवार होकर भोजावास से अपने गांव की ओर आ रहे थे। पड़तल के समीप पहुंचे तो सड़क पर आई नीलगाय को बचाने के इत्तफाकिया प्रयास में कैंपर गाड़ी पलट गई।

कैंपर को नीरज चला रहा था। गाड़ी में सवार व्यक्तियों को चोटें लगी। जिन्हें एंबुलेंस के माध्यम से उप नागरिक अस्पताल कनीना में दाखिल कराया, जहां चिकित्सकों ने नीरज को मृत घोषित कर दिया जबकि आशीष उर्फ तरूण व कौशल का उपचार कर हायर सेंटर रेफर कर दिया। देवेंद्र को चोट न आने के चलते अस्पताल में दाखिल नहीं हुआ। सूचना मिलने पर पुलिस टीम मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर उसे अस्पताल की मोर्चरी में रखवा दिया। शनिवार सुबह उसका पंचनामा करवा कर परिजनों को सौंप दिया गया। जहां परिजनों ने उसका अंतिम संस्कार कर दिया। थाना इंचार्ज निरीक्षक देवेंद्र कुमार ने बताया कि संदीप की शिकायत पर इत्तफाकिया कार्रवाई करते हुए केस दर्ज कर लिया। घायलों में एक व्यक्ति की हालत गंभीर बताई जा रही है।

कनीना। कनीना-पड़तल गांव के समीप दुर्घटनाग्रस्त कैंपर गाड़ी।

सड़क हादसे में बाइक सवार सफाई कर्मचारी की मौत

सिंघाना रोड पर गांव खटोटी फ्लाईओवर के पास हुआ हादसा

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

सिंघाना रोड पर गांव खटोटी फ्लाईओवर के पास सड़क हादसे में बाइक सवार सफाई कर्मचारी की मौत हो गई। मृतक की पहचान दौचाना निवासी करीब 54 वर्षीय मदन लाल के रूप में हुई है, जो पशुपालन विभाग में सफाई कर्मचारी के पद पर कार्यरत था।

मदन लाल अपने पिता विनोद कुमार के साथ मोटरसाइकिल से घर की ओर लौट रहे थे। इसी दौरान पीछे से आ रही एक तेज रफ्तार कार ने उनकी बाइक को जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर से मदन लाल सड़क पर गिर पड़े और गंभीर चोटें आईं। हादसे के बाद कार चालक मौके से फरार हो गया।

राहगीरों की मदद से घायल को नागरिक अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। गहली चौकी पुलिस ने परिजनों की शिकायत के आधार पर अज्ञात कार चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर नागरिक अस्पताल से शव का पोस्टमार्टम कराया और उसे परिजनों को सौंप दिया।

राव नरबीर का पुतला फूंक जताया आक्रोश

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

- फायर कर्मियों ने उद्योग मंत्री पर अभद्र टिप्पणी करने का लगाया आरोप

प्रदेश के उद्योग मंत्री राव नरबीर सिंह पर फायर कर्मियों ने अभद्र टिप्पणी करने का आरोप लगाते हुए शनिवार को नगर परिषद परिसर में उनके पुतले का दहन किया और आक्रोश स्वरूप उनके खिलाफ जमकर नारेबाजी कर अपनी भड़ास निकाली। यह प्रदर्शन नगर पालिका कर्मचारी संघ के बैनर तले किया गया। फायर कर्मियों ने कहा कि उद्योग मंत्री राव नरबीर सिंह ने फॉयर कर्मियों के खिलाफ अभद्रतापूर्ण टिप्पणी की है। उसके विरोध में सभी कर्मचारियों में भारी रोष है, जिसकी वजह से राव नरबीर का पुतला फूंका जा रहा है। उन्होंने कहा कि या तो राव नरबीर सिंह फॉयर कर्मचारियों से माफी मांगें अन्यथा पूरे प्रदेश में कर्मचारी उनके खिलाफ उग्र प्रदर्शन करेंगे। इस मौके पर नगर पालिका कर्मचारी संघ के प्रांतीय कोषाध्यक्ष महेंद्र सिंह संगेलिया, प्रधान भूपेंद्र सिंह, फायर से सचिव एवं प्रधान रामसिंह, संदीप कुमार, आकाश, हवासिंह, सुभाष, विकास यादव, महेंद्र, देवी प्रसन्न, ओमप्रकाश, देवेंद्र, हरिओम, रविकांत, सुभाष चंद, सुनील कुमार, सतपाल सिंह, मुलायम सिंह, राहुल, आशीष कुमार, पंकज कुमार, विनीत कुमार, गुरुदयाल सिंह, महावीर प्रसाद, दिनेश कुमार व प्रदीप कुमार आदि शामिल रहे।

नारनौल। राव नरबीर का पुतला फूंककर नारेबाजी करते फायर कर्मी। फोटो: हरिभूमि

विवाहिता ने फांसी लगा की जीवन लीला समाप्त

महेंद्रगढ़। गांव खुड़ाना में एक गांव में विवाहिता ने फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। परिजनों की शिकायत के आधार पर पुलिस ने मृतका का महेंद्रगढ़ नागरिक अस्पताल से पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया। गुरुग्राम के वजीरपुर के रहने वाले वरुण चौहान ने पुलिस में दी शिकायत में बताया कि उसके चाचा की लड़की आरती की शादी करीब 12 साल पूर्व गांव खुड़ाना के शदवन के साथ हुई थी। शादी के बाद से उसके एक लड़का भी हुआ, जिसकी उम्र करीब दस साल है। शिकायत में बताया कि बीती रात को उसके जीजा का फोन आया कि उसकी बहन आरती ने फांसी लगा ली है, जिसके बाद वे अन्य परिजनों के साथ नागरिक अस्पताल में पहुंचे। जहां पर उसका पोस्टमार्टम कराया। शिकायत में बताया कि उसकी बहन ने किस वजह से फांसी लगाई है, इसका कोई कारण नहीं है न ही उनको उसके ससुराल वालों पर किसी प्रकार का कोई शक है। शिकायत मिलने के बाद पुलिस ने इत्तफाकिया हादसे की कार्रवाई करते हुए शव का पोस्टमार्टम करवाया।

खाटू श्याम मेले के लिए कुरुक्षेत्र व दिल्ली से चलेगी स्पेशल ट्रेन, नारनौल और अटेली में होगा ठहराव

- 23 और 24 फरवरी को कुरुक्षेत्र, दिल्ली सराय रोहिल्ला से 24 फरवरी से 1 मार्च तक चलेगी स्पेशल ट्रेन

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

रेलवे प्रशासन की ओर से राजस्थान के सीकर जिले में आयोजित होने वाले खाटू श्यामजी मेले के लिए श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए 23 और 24 फरवरी से कुरुक्षेत्र-फुलेरा स्पेशल ट्रेनों का संचालन किया जाएगा। रेलवे द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार 23 फरवरी से 28 फरवरी तक (छह दिन) कुरुक्षेत्र-फुलेरा स्पेशल रेलसेवा का संचालन किया जाएगा। यह ट्रेन रात 11:30 बजे कुरुक्षेत्र से रवाना होकर अगले दिन सुबह 8:30 बजे फुलेरा पहुंचेगी। इस ट्रेन का नंबर 09712 होगा। इसी प्रकार फुलेरा-दिल्ली सराय रोहिल्ला स्पेशल ट्रेन का संचालन 24 फरवरी से 01 मार्च तक (6 दिन) किया जाएगा। यह ट्रेन सुबह 9:50 बजे फुलेरा से रवाना होकर शाम 6:05 बजे दिल्ली सराय रोहिल्ला पहुंचेगी। इस ट्रेन का नंबर 09713 होगा। वहीं दिल्ली सराय रोहिल्ला-फुलेरा स्पेशल ट्रेन (09714) का संचालन 24 फरवरी से 01 मार्च तक किया जाएगा। यह ट्रेन सुबह 7:10 बजे दिल्ली सराय रोहिल्ला से रवाना होकर दोपहर 2:30 बजे फुलेरा पहुंचेगी। रेलवे मार्ग में यह ट्रेनें कुरुक्षेत्र, थानेसर, पिहोवा, जींद, रोहतक, असौदा, बहादुरगढ़, झाड़ली, रेवाड़ी, कुंड, अटेली, नारनौल, डाबला, नीमकाथाना, सीकर सहित अन्य प्रमुख स्टेशनों पर ठहराव करेंगी।

नारनौल। रेलवे स्टेशन

अटेली और नारनौल का समय

कुरुक्षेत्र-फुलेरा स्पेशल
अटेली: सुबह 5:05 बजे
नारनौल: सुबह 5:21 बजे
फुलेरा-कुरुक्षेत्र स्पेशल
नारनौल: रात 12:40 बजे
अटेली: रात 12:56 बजे
फुलेरा-दिल्ली सराय रोहिल्ला स्पेशल
नारनौल: दोपहर 2:41 बजे
अटेली: दोपहर 2:46 बजे

क्या कहते हैं पीआरओ

उत्तर पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी अमित जाबला ने बताया कि खाटू श्यामजी मेले के दौरान श्रद्धालुओं की भारी भीड़ को देखते हुए यह विशेष रेल सेवाएं चलाई जा रही हैं, जिससे यात्रियों को सुगम एवं सुरक्षित यात्रा सुविधा मिल सके।

कंपाउंडिंग की ताकत समझें 5,500 की मासिक एसआईपी भी कर देगी लक्ष्य को पूरा

- कंपाउंडिंग में पैसा निवेश और रिटर्न दोनों पर बढ़ता है
- एसआईपी कंपाउंडिंग का सबसे सरल और प्रभावी तरीका है
- 5,500 की मासिक एसआईपी से 10–12 साल में बनेगा बड़ा फंड
- समय और निरंतरता ही कंपाउंडिंग की असली ताकत

बिजनेस डेस्क

निवेश की दुनिया में अगर किसी एक सिद्धांत को सबसे ज्यादा ताकतवर माना जाता है, तो वह है कंपाउंडिंग। यही वह जादू है, जो छोटी-छोटी बचत को समय के साथ एक बड़े फंड में बदल देता है। खासतौर पर सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिए कंपाउंडिंग का प्रभाव और भी मजबूत हो जाता है। आज कई लोग यह सोचते हैं कि कम निवेश से बड़ा लक्ष्य कैसे पूरा होगा। लेकिन सच्चाई यह है कि अगर निवेश में समय, निरंतरता और धैर्य हो, तो 5,500 रुपये जैसी मामूली मासिक राशि भी भविष्य में बड़ा कॉर्पस बना सकती है। कंपाउंडिंग का अर्थ है कि आपका पैसा केवल आपकी लगाई गई राशि पर ही नहीं, बल्कि उस पर मिलने वाले रिटर्न पर भी रिटर्न कमाने लगता है। आसान शब्दों में कहें तो "ब्याज पर ब्याज" मिलता है। जैसे-जैसे समय बढ़ता है, कंपाउंडिंग का असर तेजी से बढ़ता चला जाता है। एसआईपी में यह प्रक्रिया स्वाभाविक रूप से होती है क्योंकि आप हर महीने निवेश करते हैं और आपका पैसा लंबे समय तक बाजार में बना रहता है।

एसआईपी से लक्ष्य तक पहुंचने का उदाहरण

- मान लीजिए आप हर महीने 5,500 की एसआईपी शुरू करते हैं और आपको औसतन 12% सालाना रिटर्न मिलता है (यह केवल अनुमान है, वास्तविक रिटर्न बाजार पर निर्भर करता है)।
- मासिक निवेशः 5,500 रुपये
- सालाना निवेश : 66,000 रुपये
- कुल निवेश (11 साल में) : लगभग 7,26,000 रुपये
- अनुमानित रिटर्न : लगभग 7,24,000 रुपये
- कुल संभावित कॉर्पस : लगभग 14.5 लाख रुपये
- इस उदाहरण से साफ है कि 11 साल में आपका पैसा लगभग दोगुना हो सकता है, वह भी बिना किसी बड़ी एकमुश्त राशि के।

कंपाउंडिंग के लिए सबसे बेहतर

एसआईपी निवेश को आसान और अनुशासित बनाता है। आपको बाजार के उतार-चढ़ाव की चिंता नहीं करनी पड़ती और निवेश अपने आप नियमित रूप से होता रहता है। समय के साथ, बाजार की गिरावट और तेजी दोनों का फायदा आपको मिलता है, जिसे रुपी कॉस्ट एवरेजिंग कहा जाता है। एसआईपी खासतौर पर उन लोगों के लिए उपयोगी है जो बच्चों की शिक्षा, घर खरीदने, शादी या मेडिकल खर्च के लिए 6–15 साल के वित्तीय लक्ष्य के लिए धीरे-धीरे मजबूत फंड बनाना चाहते हैं।

कंपाउंडिंग की ताकत इन बातों पर निर्भर

कंपाउंडिंग का असर तीन चीजों से तय होता है इसमें समय, निरंतर निवेश, और धैर्य। जितनी जल्दी आप निवेश शुरू करेंगे और जितने लंबे समय तक निवेश बनाए रखेंगे, कंपाउंडिंग उतनी ही ताकतवर होगी। कंपाउंडिंग यह सिखाती है कि अमीर बनने के लिए बड़ी रकम नहीं, बल्कि समय पर सही शुरुआत जरूरी होती है। 5,500 रुपये की एसआईपी जैसी छोटी शुरुआत भी, अगर लंबे समय तक जारी रखी जाए, तो भविष्य में आपको आर्थिक रूप से मजबूत बना सकती है। एसआईपी और कंपाउंडिंग का मेल उन निवेशकों के लिए वरदान है, जो अनुशासन और धैर्य के साथ अपने सपनों को पूरा करना चाहते हैं।

कम पूंजी में बड़ा फंड बनाने को एसआईपी के जरिये करें निवेश

सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान से होगी नियमित बचत की आदत विकसित

हर माह तय राशि निवेश करें और बाजार की चिंता किए बिना लंबे समय का प्लान बनाएं

कम जोखिम के साथ बेहतर रिटर्न की संभावना रुपये की लागत औसत के कारण निवेश संतुलित

बिजनेस डेस्क

आज के समय में जब शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव आम बात हो गई है, ऐसे में आम निवेशक के लिए सुरक्षित और अनुशासित निवेश का रास्ता चुनना बेहद जरूरी हो गया है। सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान यानी एसआईपी इसी जरूरत को पूरा करता है। एसआईपी ने खासतौर पर नए और मध्यम वर्ग के निवेशकों के बीच लोकप्रियता हासिल की है, क्योंकि इसमें कम रकम से नियमित निवेश कर लंबी अवधि में मजबूत संपत्ति बनाई जा सकती है। एसआईपी के जरिए निवेशक हर महीने या तय समय अंतराल पर म्यूचुअल फंड में एक निश्चित राशि निवेश करता है। यह तरीका न केवल निवेश में अनुशासन लाता है, बल्कि बाजार की अस्थिरता से होने वाले जोखिम को भी काफी हद तक कम करता है। यही कारण है कि वित्तीय विशेषज्ञ एसआईपी को लंबी अवधि के निवेश के लिए सबसे प्रभावी माध्यम मानते हैं। इस रिपोर्ट के जरिये हम आपको बताएंगे कि एसआईपी में निवेश कर कैसे आप कम पूंजी में बड़ा फंड तैयार कर सकते हैं। सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) म्यूचुअल फंड में निवेश करने का एक ऐसा तरीका है, जिसमें निवेशक एक निश्चित राशि को नियमित अंतराल जैसे मासिक, तिमाही या साप्ताहिक निवेश करता है। इसमें निवेशक को एकमुश्त बड़ी रकम लगाने की जरूरत नहीं होती। एसआईपी अपने आप बैंक खाते से तय तारीख को कट जाती है और चुनी गई म्यूचुअल फंड स्कीम में निवेश हो जाती है। एसआईपी का सबसे बड़ा फायदा यह है कि इसमें बाजार की टाइमिंग करने की जरूरत नहीं पड़ती। बाजार ऊपर हो या नीचे, निवेश नियमित रूप से चलता रहता है। जब बाजार गिरता है, तब उसी रकम से ज्यादा यूनिट मिलती हैं और जब बाजार ऊपर जाता है, तब कम यूनिट मिलती हैं। इस प्रक्रिया को रुपया लागत औसत कहा जाता है, जो लंबे समय में निवेश की औसत लागत को संतुलित करता है।

एसआईपी में निवेश क्यों करें

- नियमित और अनुशासित निवेशः एसआईपी निवेश में निरंतरता लाता है और बाजार की टाइमिंग की चिंता खत्म करता है।
- कम रकम से शुरुआतः 500 रुपये जैसी छोटी राशि से भी निवेश संभव, जिससे हर वर्ग के लोग निवेश कर सकते हैं।
- रुपया लागत औसत और चक्रवृद्धि का लाभः बाजार के उतार-चढ़ाव में भी संतुलित रिटर्न और लंबी अवधि में तेज ग्रोथ।
- विविधीकरण और कर लाभः म्यूचुअल फंड के जरिए जोखिम कम और ईएलएसएस के माध्यम से टैक्स में बचत।

कंपाउंडिंग का मिलता है लाभ

इसके अलावा एसआईपी में चक्रवृद्धि (कंपाउंडिंग) का लाभ भी मिलता है। निवेश से मिलने वाला रिटर्न दोबारा निवेश होता है, जिससे समय के साथ रिटर्न पर भी रिटर्न मिलने लगता है। जितनी जल्दी निवेश शुरू किया जाए और जितनी लंबी अवधि तक एसआईपी जारी रखी जाए, उतना ही अधिक फायदा मिलता है। एसआईपी की खास बात यह भी है कि इसे बहुत छोटी राशि से शुरू किया जा सकता है। आज कई म्यूचुअल फंड स्कीम्स में 500 या 1,000 रुपये प्रति माह से एसआईपी शुरू की जा सकती है, जिससे यह हर वर्ग के निवेशक के लिए सुलभ बन जाती है।

एसआईपी में निवेश के फायदे

एसआईपी केवल निवेश का तरीका नहीं, बल्कि एक वित्तीय आदत है जो व्यक्ति को भविष्य के लिए तैयार करती है। यह खासतौर पर उन लोगों के लिए फायदेमंद है जो जोखिम से बचते हुए धीरे-धीरे संपत्ति बनाना चाहते हैं। एसआईपी निवेशक को अनुशासन सिखाता है। तय तारीख पर निवेश होने से खर्चों पर नियंत्रण रहता है और बचत की आदत मजबूत होती है। इसके अलावा, एसआईपी भावनात्मक फैसलों से भी बचाता है। अक्सर निवेशक बाजार गिरने पर घबरा जाते हैं और निवेश बंद कर देते हैं, लेकिन एसआईपी में नियमित निवेश से यह डर कम हो जाता है। एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश करने पर विविधीकरण का लाभ भी मिलता है।

एसआईपी के ये भी लाभ

कर बचत की दृष्टि से भी एसआईपी फायदेमंद है। इक्विटी लिंक्ड सेविंग स्कीम (ईएलएसएस) में एसआईपी के जरिए निवेश करने पर आयकर अधिनियम की धारा 80सी के तहत कर में छूट मिलती है। इससे निवेश के साथ-साथ टैक्स प्लानिंग भी हो जाती है। लंबी अवधि में एसआईपी महंगाई को मात देने में मदद करता है। बैंक एफडी या पारंपरिक बचत योजनाओं की तुलना में इक्विटी आधारित एसआईपी अधिक रिटर्न देने की क्षमता रखती हैं, जिससे भविष्य की जरूरतों जैसे बच्चों की शिक्षा, घर खरीदना या रिटायरमेंट के लिए मजबूत फंड तैयार किया जा सकता है।

निवेश करना आसान

आज के डिजिटल युग में एसआईपी के जरिये निवेश करना बेहद आसान हो गया है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, मोबाइल ऐप और एसआईपी कैलकुलेटर की मदद से निवेशक अपने लक्ष्य के अनुसार निवेश राशि और अवधि तय कर सकता है। एसआईपी कैलकुलेटर संभावित रिटर्न का अनुमान लगाकर निवेश की सही योजना बनाने में मदद करता है। कुल मिलाकर, एसआईपी उन लोगों के लिए एक आदर्श विकल्प है जो कम जोखिम में, नियमित निवेश के जरिए लंबी अवधि में संपत्ति बनाना चाहते हैं। चाहे आप नौकरीपेशा हों, स्वरोजगार में हों या निवेश की शुरुआत कर रहे हों, एसआईपी हर किसी के लिए एक भरोसेमंद निवेश माध्यम है।

नौकरी के साथ-साथ स्मार्ट तरीकों से भी बढ़ा सकते हैं कमाई

बिजनेस डेस्क

अगर आप भी नौकरीपेशा हैं और सिर्फ सैलरी पर ही जीवन काट रहे हैं तो आप अपनी गुजर बसर तो कर लेंगे, लेकिन अच्छा पैसा एकत्र नहीं कर पाएंगे। ऐसे में नौकरी के साथ कुछ छोटा मोटा स्टार्टअप शुरू करें और अपनी पूंजी को बढ़ाएं। पैसा कमाने के कुछ स्मार्ट तरीके भी हो सकते हैं, जिन्हें आजमाकर आप अपनी इनकम बढ़ा सकते हैं। एक अच्छी नौकरी जिंदगी को स्थिरता देती है, लेकिन बदलते समय में सिर्फ सैलरी पर निर्भर रहना कई बार जोखिम भरा हो सकता है। आज के दौर में एक अच्छी नौकरी मिलना किसी उपलब्धि से कम नहीं है। नौकरी आपको हर महीने तय इनकम देती है, जिससे घर चलता है, बच्चों की पढ़ाई होती है और रोजमर्रा की जिम्मेदारियां पूरी होती हैं, लेकिन बदलते समय के साथ सिर्फ नौकरी पर निर्भर रहना कई बार जोखिम भरा भी हो सकता है। कंपनी की स्थिति बदली, बाजार में मंदी आई या आपकी भूमिका खत्म हुई तो पूरी फाइनेंशियल प्लानिंग हिल सकती है। इसलिए अब नौकरी के साथ-साथ स्मार्ट तरीके से कमाई बढ़ाने की जरूरत है।

नौकरी को बनाएं अपनी सबसे मजबूत नींव

कमाई बढ़ाने का पहला और सबसे मजबूत रास्ता आपकी मौजूदा नौकरी से ही शुरू होता है। अपनी स्किल्स को अपडेट करना, नई जिम्मेदारियां लेना और खुद को कंपनी के लिए ज्यादा वैल्यूएबल बनाना लंबे समय में सैलरी और प्रमोशन दोनों दिला सकता है। हर किसी के पास कोई न कोई टैलेंट होता है। फर्क सिर्फ इतना है कि कुछ लोग उसे सिर्फ शौक तक सीमित रखते हैं, जबकि कुछ उसे कमाई का जरिया बना लेते हैं। अगर आपके पास समय और एनर्जी है, तो पढ़ाना, कंटेंट लिखना, डिजाइन, ऑनलाइन कंसल्टिंग या डिजिटल काम जैसे साइड प्रोजेक्ट शुरू किए जा सकते हैं। शुरुआत भले ही छोटी हो, लेकिन समय के साथ यही साइड इनकम आपकी बड़ी फाइनेंशियल ताकत बन सकती है। सबसे अच्छी बात यह है कि इससे आपकी नौकरी पर कोई सीधा दबाव नहीं पड़ता।

कमाई बढ़ाने का साइलेंट हथियार है निवेश

काम करके पैसा कमाना जरूरी है, लेकिन पैसे से पैसा बनाना भी उतना ही अहम है। निवेश वह तरीका है जो बिना शोर किए आपकी संपत्ति को धीरे-धीरे बढ़ाता है। नियमित एसआईपी, लॉन्ग-टर्म फंड्स या सुरक्षित विकल्प आपको भविष्य की बड़ी जरूरतों के लिए तैयार करते हैं। निवेश आपको आज अमीर नहीं बनाता, लेकिन कल के लिए मजबूत बनाता है. जो लोग जल्दी इसकी आदत डालते हैं, वे आगे चलकर ज्यादा तनाव-मुक्त रहते हैं।

इंश्योरेंस कमाई बचाने की ढाल

कमाई बढ़ाने के साथ-साथ उसे सुरक्षित रखना भी उतना ही जरूरी है। हेल्थ इंश्योरेंस अचानक आने वाले मेडिकल खर्चों से बचाता है और लाइफ इंश्योरेंस परिवार को आर्थिक सुरक्षा देता है। कई लोग इसे खर्च समझकर नजरअंदाज कर देते हैं, लेकिन असल में यह आपकी कमाई की सुरक्षा कवच होता है। सही समय पर लिया गया इंश्योरेंस सालों की मेहनत को एक झटके में खत्म होने से बचा सकता है।

नई स्किल्स से खुलेंगे नए रास्ते

आज का जॉब मार्केट तेजी से बदल रहा है। जो स्किल्स आज काम की हैं, जरूरी नहीं कि कल भी उतनी ही जरूरी रहें। इसलिए लगातार सीखते रहना अब विकल्प नहीं, मजबूरी बन चुका है। नई स्किल्स आपको सिर्फ नई नौकरी ही नहीं, बल्कि साइड इनकम और बेहतर फ्रीलांस मौके भी दिला सकती हैं। जब आपके पास विकल्प होते हैं, तो आप ज्यादा आत्मविश्वास और सुरक्षित महसूस करते हैं।

लाइफस्टाइल और कमाई में संतुलन जरूरी

कमाई बढ़ने के साथ खर्च बढ़ाना स्वाभाविक है, लेकिन अगर सारा पैसा सिर्फ बेहतर लाइफस्टाइल में ही चला जाए, तो भविष्य फिर भी असुरक्षित रहता है। समझदारी इसी में है कि इनकम बढ़ने पर बचत और निवेश भी उसी अनुपात में बढ़ें। इससे आप आज की जिंदगी का मजा भी ले पाएंगे और कल की चिंता भी कम रहेगी।

एक साल के लिए निवेश करना है तो ये हो सकते हैं बेहतर विकल्प

बिजनेस डेस्क। जब भी निवेश की बात आती है, ज्यादातर लोग रिटायरमेंट, बच्चों की शिक्षा या घर खरीदने जैसे लंबे समय के लक्ष्यों पर ध्यान देते हैं, लेकिन वित्तीय योजना में शॉर्ट-टर्म निवेश भी उतना ही जरूरी होता है। इमरजेंसी फंड बनाना, अतिरिक्त पैसे को सुरक्षित जगह रखना या किसी नजदीकी खर्च के लिए रकम जुटाना इन सभी के लिए 1 साल की निवेश योजना बेहद उपयोगी साबित होती है। केवल लंबी अवधि के निवेश पर निर्भर रहना कई बार जोखिम भरा हो सकता है। अचानक जरूरत पड़ने पर अगर आपको लॉन्ग-टर्म निवेश तोड़ना पड़े, तो नुकसान भी हो सकता है। ऐसे में 1 साल तक के शॉर्ट-टर्म इन्वेस्टमेंट विकल्प न सिर्फ पूंजी की सुरक्षा करते हैं, बल्कि सेविंग अकाउंट से बेहतर रिटर्न भी दे सकते हैं। अधिकांश लोग निवेश को लंबे समय के लक्ष्यों जैसे रिटायरमेंट, बच्चों की शिक्षा या घर खरीदने से जोड़कर देखते हैं, लेकिन वित्तीय योजना में शॉर्ट-टर्म निवेश की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण होती है। इमरजेंसी फंड तैयार करना, अतिरिक्त पैसे को सुरक्षित जगह पर रखना या किसी नजदीकी खर्च के लिए राशि जुटाना इन सभी के लिए 1 साल की निवेश योजना बेहद उपयोगी साबित होती है।

1. बैंक फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी)

बैंक एफडी भारत में सबसे भरोसेमंद निवेश विकल्पों में से एक है। 7 दिन से लेकर 1 साल तक के लिए एफडी करवाएं।

फायदे : पूंजी की सुरक्षा, तय व सुनिश्चित रिटर्न, जोखिम ना के बराबर, सरकारी, निजी और स्मॉल फाइनेंस बैंक अलग-अलग ब्याज दरें देते हैं, इसलिए निवेश से पहले तुलना करना जरूरी है। पोस्ट ऑफिस टाइम डिपॉजिट सुरक्षित विकल्प।

2. सेविंग अकाउंट स्वीप-इन एफडी

यह सुविधा सेविंग अकाउंट और एफडी का मिश्रण है। इसमें तय सीमा से ज्यादा पैसा अपने आप एफडी में चला जाता है।

फायदेः जरूरत पड़ने पर तुरंत पैसा उपलब्ध, सेविंग अकाउंट से ज्यादा ब्याज ऑटोमैटिक और सुविधाजनक, यह विकल्प उन लोगों के लिए अच्छा है, जिन्हें लिक्विडिटी भी चाहिए और बेहतर रिटर्न भी।

3. रिकरिंग डिपॉजिट (आरडी)

अगर आप एकमुश्त रकम निवेश नहीं करना चाहते, तो आरडी अच्छा विकल्प है। इसमें हर महीने एक तय राशि जमा की जाती है।

फायदेः छोटी रकम से शुरुआत, नियमित बचत की आदत, सुरक्षित और स्थिर रिटर्न सैलरी पाने वाले निवेशकों के लिए यह विकल्प खासतौर पर उपयोगी है।

4. डेट म्यूचुअल फंड

डेट फंड सरकारी बॉन्ड, ट्रेजरी बिल और अच्छी क्वालिटी के कॉरपोरेट बॉन्ड में निवेश करते हैं।

1 साल के लिए उपयुक्त कैटेगरीः शॉर्ट ड्यूरेशन फंड, मनी मार्केट फंड, लो ड्यूरेशन फंड, इनमें एफडी से थोड़ा बेहतर रिटर्न मिलने की संभावना होती है, हालांकि थोड़ा जोखिम भी रहता है।

5. लिक्विड फंड

लिक्विड फंड बहुत कम अवधि के लिए बनाए गए होते हैं, लेकिन 1 साल तक निवेश के लिए भी इस्तेमाल किए जा सकते हैं।

फायदेः 1 कार्यदिवस में पैसा उपलब्ध, सेविंग अकाउंट से बेहतर रिटर्न, कम जोखिम, अतिरिक्त पैसों को पार्क करने के लिए यह बेहतरीन विकल्प है।

6. कॉरपोरेट फिक्स्ड डिपॉजिट

कई कंपनियां बैंक एफडी से ज्यादा ब्याज पर एफडी ऑफर करती हैं।

ध्यान रखेंः कंपनी की क्रेडिट रेटिंग जरूर जांचें, केवल मजबूत वित्तीय स्थिति वाली कंपनियों में निवेश करें, ज्यादा रिटर्न के साथ जोखिम भी ज्यादा, जो निवेशक थोड़ा जोखिम उठा सकते हैं, उनके लिए यह विकल्प उपयुक्त है।

माता-पिता को सही प्लानिंग करनी होगी, तभी वे बच्चों के सपने पूरे कर पाएंगे

बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए समय रहते ठोस और संतुलित निवेश योजना बनाएं

बढ़ती महंगाई के दौर में बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए प्लानिंग जरूरी, आज हर परिवार की वित्तीय योजना को प्रभावित किया

योजना
बिजनेस डेस्क

तेजी से बढ़ती महंगाई ने आज हर परिवार की वित्तीय योजना को प्रभावित किया है। खासतौर पर बच्चों की शिक्षा, जो कभी एक सामान्य खर्च मानी जाती थी, अब माता-पिता के लिए सबसे बड़ी वित्तीय जिम्मेदारी बन चुकी है। स्कूल से लेकर कॉलेज और फिर उच्च शिक्षा तक, फीस में हो रही बढ़ोतरी सामान्य महंगाई दर से कहीं ज्यादा है। इंटरनेशनल बोर्ड, विदेश में पढ़ाई, प्रोफेशनल और स्पेशल कोर्स, हॉस्टल और रहने का खर्च ये सभी मिलकर शिक्षा को और महंगा बना रहे हैं। ऐसे समय में अगर माता-पिता अभी से सही प्लानिंग नहीं करते, तो भविष्य में बच्चों के सपनों से समझौता करना पड़ सकता है। इसलिए जरूरी है कि बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए समय रहते एक ठोस और संतुलित निवेश योजना बनाई जाए। इस रिपोर्ट के जरिये हम आपको बताएंगे कि बच्चों की शिक्षा के लिए शुरू से ही कैसे रणनीति बनाएं।

एसआईपी की जल्दी शुरुआत करें

बच्चों की शिक्षा के लिए निवेश की सबसे बड़ी कुंजी है जल्दी शुरुआत। जितना जल्दी आप निवेश शुरू करेंगे, उतना ही ज्यादा आपको कंपाउंडिंग का फायदा मिलेगा। एसआईपी यानी सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान, शिक्षा फंड बनाने का एक बेहद कारगर तरीका है। एसआईपी के जरिए आप हर महीने एक तय राशि म्यूचुअल फंड में निवेश कर सकते हैं। इससे बाजार के उतार–चढ़ाव का असर कम होता है और लंबी अवधि में निवेश बेहतर रिटर्न दे सकता है। अगर बच्चे की उम्र कम है, तो आप इक्विटी आधारित फंड में ज्यादा निवेश कर सकते हैं, क्योंकि लंबा समय जोखिम को संतुलित कर देता है।

कई माता-पिता एजुकेशन लोन को गलत मानते हैं और इससे पूरी तरह बचना चाहते हैं। लेकिन यह सोच हमेशा सही नहीं होती। सही योजना और समझदारी के साथ लिया गया एजुकेशन लोन कई मामलों में फायदेमंद साबित हो सकता है।

समय के साथ निवेश में बदलाव

कई माता-पिता बच्चों की शिक्षा के लिए सिर्फ एक ही तरह के निवेश पर निर्भर रहते हैं, जो आगे चलकर जोखिम भरा हो सकता है। सही रणनीति यह है कि समय के हिसाब से निवेश का संतुलन बदला जाए। जब बच्चा छोटा हो, तब इक्विटी फंड में निवेश ज्यादा रखा जा सकता है। लेकिन जैसे-जैसे कॉलेज या उच्च शिक्षा का समय नजदीक आता है, वैसे-वैसे जोखिम कम करना जरूरी हो जाता है। ऐसे समय में डेट फंड, फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी), सेविंग अकाउंट या शॉर्ट-टर्म इंस्ट्रूमेंट जैसे सुरक्षित विकल्पों में पैसा शिफ्ट करना समझदारी होती है। इससे बाजार गिरने की स्थिति में फीस के समय पैसों की कमी नहीं होगी।

केवल फीस नहीं, पूरे खर्च का रखें ध्यान

अक्सर माता-पिता शिक्षा की प्लानिंग करते समय सिर्फ ट्यूशन या कॉलेज फीस को ही ध्यान में रखते हैं, जबकि असल खर्च इससे कहीं ज्यादा होता है। बच्चों की उच्च शिक्षा से जुड़े कई अतिरिक्त खर्च होते हैं, जैसे : हॉस्टल या रहने का खर्च, किताबें और स्टडी मटीरियल, लैपटॉप, टैबलेट और अन्य गैजेट्स, हेल्थ इंश्योरेंस, यात्रा खर्च, एप्लिकेशन और एंट्रेंस एग्जाम फीस, इंटर्नशिप और प्रोजेक्ट से जुड़े खर्च आदि। अगर बच्चा विदेश में पढ़ाई करना चाहता है, तो वहां रहने, वीजा, बीमा और ट्रैवल का खर्च और भी ज्यादा हो सकता है। इसलिए शिक्षा फंड बनाते समय इन सभी खर्चों को शामिल करना बेहद जरूरी है।

एजुकेशन लोन को पूरी तरह न नकारें

कई माता-पिता एजुकेशन लोन को गलत मानते हैं और इससे पूरी तरह बचना चाहते हैं। लेकिन यह सोच हमेशा सही नहीं होती। सही योजना और समझदारी के साथ लिया गया एजुकेशन लोन कई मामलों में फायदेमंद साबित हो सकता है।

एजुकेशन लोन के लाभ

- रिटायरमेंट फंड को सुरक्षित रखता है
- एकमुश्त निवेश निकालने का दबाव कम करता है
- टैक्स में छूट का लाभ मिल सकता है
- पढ़ाई के बाद बच्चा खुद लोन चुकाने में सक्षम होता है
- हालांकि, लोन लेने से पहले उसकी ब्याज दर, चुकाने की अवधि और भविष्य की आय को जरूर ध्यान में रखें।

लक्ष्य आधारित निवेश योजना बनाएं

बच्चों की शिक्षा के लिए निवेश करते समय लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिए। किस उम्र में, किस देश में और किस कोर्स के लिए पढ़ाई करानी है। जब लक्ष्य साफ होता है, तो सही निवेश विकल्प चुनना आसान हो जाता है। इसके लिए आप एजुकेशन एसआईपी, चाइल्ड फंड, बैलेंस्ड म्यूचुअल फंड, डेट और इक्विटी का मिश्रण जैसे विकल्पों का उपयोग कर सकते हैं। समय-समय पर अपनी योजना की समीक्षा करना भी जरूरी है, ताकि बदलती जरूरतों के अनुसार निवेश में सुधार किया जा सके।

योजना बनाना अब विकल्प नहीं, बल्कि जरूरत

बढ़ती महंगाई के इस दौर में बच्चों की उच्च शिक्षा की योजना बनाना अब विकल्प नहीं, बल्कि जरूरत बन चुका है। केवल एसआईपी शुरू कर देना ही काफी नहीं है, बल्कि सही समय पर निवेश, जोखिम का संतुलन, अन्य खर्चों की गणना और जरूरत पड़ने पर एजुकेशन लोन का समझदारी से इस्तेमाल करना भी उतना ही जरूरी है।अगर माता-पिता आज से सही निवेश योजना बनाते हैं, तो आने वाले समय में बच्चों के सपनों को पूरा करने में कोई आर्थिक बाधा नहीं आएगी। सही प्लानिंग न सिर्फ बच्चों का भविष्य सुरक्षित करती है, बल्कि माता-पिता को भी मानसिक शांति देती है।

बाल विवाह बच्चों के भविष्य के साथ अन्याय: विधायक कंवर सिंह

विधायक ने जागरूकता रथ को दिखाई हरी झंडी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

सोसायटी फॉर एजुकेशन एंड वैलफेयर एक्टिविटिज सेवा संस्था द्वारा संचालित एक्सेस टू जस्टिस फॉर चिल्ड्रन परियोजना एवं बाल विवाह मुक्त भारत अभियान के तहत जिले के गांवों व शहरों में बाल विवाह रोकथाम को लेकर जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से एक विशेष रथ यात्रा निकाली जा रही है। इस अभियान के तहत विधायक कंवर सिंह यादव ने अपने कार्यालय से जागरूकता रथ को हरी झंडी दिखाकर एवं हस्ताक्षर कर रवाना किया, ताकि यह रथ जिले के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर लोगों को बाल विवाह न करने के लिए प्रेरित कर सके। विधायक ने सेवा संस्था के इस सराहनीय प्रयास की प्रशंसा करते हुए बाल विवाह रथ पर चल रहे हस्ताक्षर अभियान में स्वयं भी हस्ताक्षर किए। विधायक कंवर सिंह यादव ने कहा कि बाल विवाह बच्चों के भविष्य के साथ अन्याय है, जो उनके शिक्षा, स्वास्थ्य और अधिकारों पर सीधा प्रहार करता है। ऐसे जागरूकता अभियानों से समाज में सकारात्मक सोच विकसित होगी और लोग बाल विवाह जैसी सामाजिक कुप्रथा के विरुद्ध एकजुट होकर आवाज उठाएंगे। उन्होंने आश्वासन दिया कि वे स्वयं भी इस सामाजिक बुराई के खिलाफ लगातार कार्य करते रहेंगे और आमजन से बाल विवाह मुक्त भारत के निर्माण में सहयोग करने का आह्वान किया। सेवा संस्था से मोहित ने बताया कि बाल विवाह मुक्त रथ के माध्यम से बाल विवाह निषेध अधिनियम 2006, उससे संबंधित कानूनों एवं बाल अधिकार संरक्षण से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां आमजन तक पहुंचाई जा रही हैं। यह अभियान कैलाश सत्यार्थी चिल्ड्रन फाउंडेशन की नोडल संस्था जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रन दिल्ली द्वारा भारत सरकार के बाल विवाह मुक्त भारत कार्यक्रम के अंतर्गत संचालित किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि यह रथ नांगल चौधरी, निजामपुर, अटेली और नारनौल प्रशासनिक खंडों के ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता फैलाने के बाद महेंद्रगढ़ विधानसभा क्षेत्र के गांवों व शहरों में पहुंचा है।

महेंद्रगढ़। जागरूकता रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए। फोटो : हरिभूमि

▶▶| अभियानों से समाज में सकारात्मक सोच विकसित होगी

▶▶| सामाजिक कुप्रथा के विरुद्ध एकजुट होकर आवाज उठाएंगे

संस्था सरकारी विभागों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कर रही कार्य

सेवा संस्था से दरियाव सिंह ने जानकारी दी कि बाल विवाह को जड़ से समाप्त करने के उद्देश्य से संस्था पिछले कई महीनों से सरकारी विभागों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही है। संस्था द्वारा स्कूलों, ग्रामीण समुदायों और अन्य संस्थानों में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं तथा पूरे जिले में बाल विवाह के खिलाफ शपथ समारोह भी करवाए गए हैं। यह रथ यात्रा 15 दिनों में पूरे जिले का भ्रमण कर बाल विवाह रोकथाम के संदेश को जन-जन तक पहुंचाएगी, जिससे सरकार के इस अभियान को और मजबूती मिलेगी। इस अवसर पर हेमंत शर्मा, हेमंत सैनी, कर्मपाल यादव, विकास यादव, छोटेलाल, जय भगवान, अमित कुमार, ललित कुमार सहित अनेक लोग उपस्थित रहे।

आत्मरक्षा एवं ब्यूटी पार्लर की 10 दिवसीय कार्यशाला का समापन

■ आज के युग में बेटियों को आत्मरक्षा के साथ-साथ व्यावसायिक कौशल और हुनर सीखना अत्यंत आवश्यक : प्राचार्य

नारनौल। राजकीय महाविद्यालय के महिला प्रकोष्ठ के तहत आत्मरक्षा एवं ब्यूटी पार्लर की 10 दिवसीय कार्यशाला का शनिवार को समापन समारोह हुआ। इसकी अध्यक्षता प्राचार्य प्रोफेसर राजवीर सिंह ने की। प्राचार्य डॉ राजवीर सिंह ने कहा कि इन व्यवहारिक कार्यशालाओं का उद्देश्य छात्राओं में आत्मविश्वास विकसित करना तथा उन्हें स्व-रोज़गार व आत्मनिर्भरता की दिशा में प्रेरित करना था। आज के समय में आत्मरक्षा के साथ-साथ व्यावसायिक कौशल अत्यंत आवश्यक हैं। उन्होंने छात्राओं को सीखी गई क्षमताओं के माध्यम से स्व-रोजगार अपनाकर आत्मनिर्भर बनने पर विशेष जोर दिया। इस अवसर पर उपप्राचार्य डॉ हवा सिंह ने विधार्थियों का उत्साह वर्धन किया और बाहर से आए दोनों प्रशिक्षकों का धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रेस प्रवक्ता प्रोफेसर डॉ चंद्रमोहन ने बताया कि महाविद्यालय की बेटियों में हुनरमंद बना कर आत्मनिर्भर और आत्मरक्षा हेतु मार्शल आर्ट्स की कलाओं से परिपूर्ण और निपुण करके समाज की मुख्य धारा से जोड़ने हेतु कार्यशाला का आयोजन किया गया था। महिला प्रकोष्ठ की प्रभारी एवं संयोजक डॉ पलक ने बताया कि आत्मरक्षा प्रशिक्षण में कोच मनोहर लाल ने छात्राओं को आत्मरक्षा के विभिन्न व्यावहारिक गुर सिखाए। जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ा। साथ ही छात्राओं को ब्यूटी पार्लर प्रशिक्षण के अंतर्गत हेयर स्टाइलिंग, फेशियल, मेकअप एवं स्किन केयर से संबंधित जानकारी दी गई। यह प्रशिक्षण सिमरनज मेकओवर की ओनर सिमरन अग्रवाल द्वारा प्रदान किया गय। उन्होंने अपने संबोधन में कार्यशाला में भाग लेने वाली छात्राओं को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

नारनौल। ब्यूटी पार्लर प्रशिक्षण लेती छात्राएं। फोटो : हरिभूमि

खबर संक्षेप

विजय स्कूल में सूर्य नमस्कार कार्यक्रम आयोजित

महेंद्रगढ़। विजय इंटरनेशनल स्कूल में हरियाणा योग आयोग, आयुष विभाग, शिक्षा, खेल एवं पुलिस विभाग के संयुक्त तत्वाधान में चलाए जा रहे विशेष योग अभियान के तहत एक भव्य योग एवं सूर्य नमस्कार कार्यक्रम आयोजित किया गया। सचिव महेंद्र सिंह ने बताया कि यह अभियान 12 जनवरी स्वामी विवेकानंद जयंती से शुरू होकर 12 फरवरी स्वामी दयानंद जयंती तक हरियाणा योग आयोग चेयरमैन डॉ. जयदीप आर्य के निर्देशानुसार चलाया जा रहा है। आयुष योग सहायक सुनील देवी ने विद्यार्थियों को सूर्य नमस्कार एवं अन्य योग क्रियाएं करवाते हुए बताया कि सूर्य नमस्कार केवल व्यायाम नहीं, अपितु शरीर को ऊर्जावान बनाए रखने का एक संपूर्ण विज्ञान है।

छात्र उत्तम का सीएम कप के लिए चयन

महेंद्रगढ़। राजकीय मॉडर्न वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भोजावास के छात्र उत्तम पुत्र बाबूलाल कक्षा दसवीं का खो- खो राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में सीएम कप के लिए चयन किया गया है। कोयल पब्लिक स्कूल कटौती नारनौल में पांच फरवरी को जिला स्तर पर खो-खो की ट्रायल प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। पांच फरवरी की इस ट्राइल प्रतियोगिता में उत्तम का चयन किया गया। 9-10 फरवरी को राज्य स्तरीय खो-खो प्रतियोगिता पलवल में आयोजित की जाएगी। इस राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में उत्तम मॉडर्न स्कूल भोजावास की तरफ से जिला महेंद्रगढ़ का प्रतिनिधित्व करेगा। राज्य स्तरीय खो- खो टीम में चयनित छात्र उत्तम को संस्था निदेशक राजकुमार यादव, हवा सिंह यादव, प्रबंधन समिति सदस्य नवीन कुमार, मनोज कुमार, प्राचार्य अनिल कुमार, उपप्राचार्य शकुंत शहरावत, वरिष्ठ अध्यापक रामसिंह, राकेश कुमार और समस्त स्टाफ सदस्यों ने मेडल पहनकर सम्मानित किया।

ज्ञानकोष-ए ग्लोबल स्कूल में भगवत गीता शुरू

महेंद्रगढ़। गांव गढ़ी के मूल निवासी तथा गांव खरकड़ा आकोदा स्थित ज्ञानकोष-ए ग्लोबल स्कूल संस्थापक सुरेश अग्रवाल और कोलकाता स्थित औद्योगिक घरानें तथा इस्पात उत्पादक कंपनियों में से एक एमएसपी स्टील एंड पावर लिमिटेड ने शनिवार को भगवत गीता के मूल्यों पर आधारित एक सप्ताह तक चलने वाले जीवन पाठ सत्र आयोजित किया। मुंबई स्थित इस्कॉन चौवाटी के प्रख्यात आध्यात्मिक परामर्शदाता और लेखक नित्यानंद चरण दास गीता के मूल्यों का ज्ञान साझा करेंगे। यह अमृत महोत्सव छह से 12 फरवरी तक चलेगा, जिसमें आध्यात्मिक गुरु गीता के आंतरिक मूल्यों की व्याख्या करेंगे और बताएंगे कि वे आज भी हमारे दैनिक जीवन के लिए कितने प्रासंगिक हैं। सभी हितधारकों के प्रयासों और निरंतर सहयोग ने एमएसपी समूह को अपने संचालन के 50 से अधिक वर्ष पूरे करने में सक्षम बनाया है।

आत्मरक्षा कार्यशाला का हुआ समापन

महेंद्रगढ़। आरपीएस डिग्री कॉलेज के महिला प्रकोष्ठ के तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय महिला आत्मरक्षा कार्यशाला का शनिवार को समापन हुआ। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य छात्राओं का सशक्तिकरण करना और उनमें सुरक्षा के प्रति आत्मविश्वास जगाना था। समापन सत्र में महाविद्यालय प्रबंधन, शिक्षकों और छात्राओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया। कार्यक्रम के मुख्य प्रशिक्षक और नेताजी सुभाष राष्ट्रीय खेल संस्थान से प्रमाणित कोच लोकेश सैनी एवं सहायक नितेश सैनी ने दो दिनों तक छात्राओं को कराटे और आत्मरक्षा की बारीकियां सिखाईं। ब्लैक बेल्ट धारक लोकेश सैनी ने छात्राओं को पंच, ब्लॉक और सेल्फ-डिफेंस मूव्स का सघन व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया। उन्होंने कहा कि आत्मरक्षा की तकनीक न केवल शारीरिक सुरक्षा प्रदान करती हैं, बल्कि मानसिक दृढ़ता और आत्मविश्वास भी बढ़ाती हैं। कॉलेज प्राचार्य डॉ. देवेन्द्र सिंह कादियान ने कहा कि सशक्त नारी ही सशक्त समाज की नींव होती है। वर्तमान परिदृश्य में आत्मरक्षा अब केवल एक शौक या खेल नहीं, बल्कि जीवन की अनिवार्य आवश्यकता बन गई है। आरपीएस कॉलेज अपनी छात्राओं के सर्वांगीण विकास और सुरक्षा के लिए सदैव प्रतिबद्ध है।

नेतराम स्कूल की छात्राएं कानूनी साक्षरता में अव्वल

नारनौल। राजकीय माडल संस्कृति विद्यालय महेन्द्रगढ में आयोजित जिला स्तरीय कानूनी साक्षरता प्रतियोगिता में राव नेतराम पब्लिक स्कूल सलीमपुर की छात्राओं ने उत्साहजनक प्रदर्शन किया है। प्राचार्य अनीता देवी ने विजेता छात्राओं को बधाई देते हुए बताया कि अन्शु पुत्री योगेश ने पॉवर पवाईंट प्रस्तुतिकरण में द्वितीय तथा राधिका पुत्र रामरतन ने डोक्यूमेन्ट्री फिल्म में प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया है। उन्होंने यह भी बताया कि इन प्रतियोगिताओं से छात्राओं में कानूनी साक्षरता का ज्ञान बढ़ा है तथा अब विजेता प्रतिभागी गुरुग्राम राज्य स्तर पर होने वाली प्रतियोगिता में भाग लेंगी। इस मौके पर राजबाला, पूजा व अन्य स्टाफ उपस्थित रहा।

खबर संक्षेप

मोनिका ने प्राप्त की यूजीसी नैट परीक्षा में सफलता

सतनाली मंडी। खंड के गांव बास सतनाली की मोनिका पुत्री विनोद कुमार ने भूगोल विषय में यूजीसी नैट परीक्षा में सफलता प्राप्त की है। मोनिका ने ईडब्ल्युएस जनरल कैटेगरी में ज्योग्राफी में 97.63 परसेंटाइल प्राप्त कर परीक्षा में सफलता प्राप्त की। उन्होंने अपनी सफलता का श्रेय गुरुजनों एवं परिजनों के मार्गदर्शन एवं प्रेरणा को दिया।

धानक समाज की बैठक आज

महेंद्रगढ़। बस स्टैंड के पास धानक समाज धर्मशाला व आंबेडकर छात्रावास को निर्माण कार्य को तकनीकी स्वरूप प्रदान करने के लिए समाज की ओर से रविवार को यादव धर्मशाला में एक बैठक आयोजित की जाएंगी। संयोजक मोहन लाल कोथल व सूबेदार अमर सिंह देवास ने बताया कि यह बैठक यादव धर्मशाला में दोपहर 1:30 बजे होगी।

सतनाली गोशाला में 2 दिवसीय सत्संग कल से

सतनाली मंडी। आदर्श गोशाला इलाका सतनाली में सोमवार से दो दिवसीय जीवन उपयोगी सत्संग समारोह का आयोजन किया जाएगा। गोशाला उपप्रधान दीवान सिंह शेखावत ने बताया कि गोशाला प्रांगण में श्री हरिकृष्ण जी महाराज वृंदावन के सान्निध्य में नौ व 10 फरवरी को सत्संग समारोह का आयोजन किया जाएगा।

स्कूल में विदाई समारोह आयोजित

महेंद्रगढ़। श्रीकृष्णा स्कूल में शनिवार को विदाई समारोह आयोजित किया गया, जिसमें ग्रुप चेयरमैन डॉ. बीरसिंह यादव मुख्यातिथि, विशिष्ट अतिथि सीईओ कर्मवीर राव व डॉ. कविता राव तथा अध्यक्षता प्राचार्य रवि प्रकाश द्वारा की गई। पी आर ओ सुधीर यादव ने बताया कि मुख्यातिथि डॉ. बीरसिंह यादव, सीईओ कर्मवीर राव व प्राचार्य रवि प्रकाश द्वारा विद्या की देवी मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। समारोह के दौरान विद्यार्थियों द्वारा अपने दिल की भावनाओं एवं विद्यालय प्रांगण में बिताए गए समय में मिले अनुभवों को सांझा किया। विदाई समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम, नृत्य, गान, अभिनय व हंसी-मजाक ने कार्यक्रम को चार चांद लगाए। सेम-टेम, सेम-टेम पंजाबी सोंग, होली-होली नच ले, काला चश्मा जचता हे गौरे मुखड़े सहित अन्य गानों में डांस कर अपनी शानदार प्रस्तुति दी। चेयरमैन डॉ. बीरसिंह यादव ने कहा कि निरंतर प्रयास, कठिन परिश्रम व अनुशासन के माध्यम से ही सफलता प्राप्त की जा सकती है।

यदुवंशी शिक्षा निकेतन स्कूल में आशीर्वाद व अभिनंदन समारोह

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

यदुवंशी स्कूल में कक्षा 12वीं के विद्यार्थियों के लिए कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों ने एक विदाई समारोह आयोजित किया। कार्यक्रम की शुरुआत तिलक लगाकर भव्य स्वागत और पारंपरिक दीप प्रज्वलन के साथ हुई, जो आशा और नई शुरुआत का प्रतीक है। विदाई समारोह में जूनियर विद्यार्थियों ने सीनियर्स के लिए रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए, जिनमें नृत्य, गीत और मनोरंजक गतिविधियां शामिल रहीं। कार्यक्रम में ग्रुप चेयरमैन एवं पूर्व विधायक राव बहादुर सिंह ने अपने संबोधन में कक्षा 12वीं के छात्रों को आत्मविश्वास, ईमानदारी और दृढ़ता के साथ जीवन का सामना करने के लिए प्रेरित किया और उन्हें बोर्ड परीक्षाओं व उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम में वाइस-चेयरमैन एडवोकेट कर्ण सिंह यादव, वाइस-चेयरपर्सन संगीता यादव, ग्रुप निदेशक विजय सिंह यादव, फाउंडर डायरेक्टर डॉ. राजेंद्र सिंह यादव ने भी विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

जेजेपी महिला संगठन ने 4 महिला हलका प्रधान किए घोषित

नारनौल। जननायक जनता पार्टी महिला विंग की जिला अध्यक्ष सोनिया धनखड़ ने संगठन को ज़मीनी स्तर पर और मजबूत करने के लिए जिले की चारों विधानसभाओं के लिए महिला हल्का प्रधानों की घोषणा कर दी है। इस दौरान सोनिया धनखड़ ने कहा कि पार्टी नेतृत्व महिलाओं को राजनीतिक रूप से सशक्त बनाने के लिए लगातार काम कर रहा है और यह विस्तार उसी दिशा में एक मजबूत कदम है। इस संबंध में पार्टी के जिला प्रवक्ता विजय छिलरो ने बताया कि नैना चौटाला के मार्गदर्शन और प्रेरणा से प्रदेश भर में महिला संगठन तेजी से मजबूत हो रहा है। सोनिया धनखड़ ने बताया कि नैना चौटाला ने हरी चुनरी चौपाल जैसे कार्यक्रमों के जरिए महिलाओं को सम्मान देने का काम किया है। नई नियुक्तियों से पार्टी की नीतियां घर-घर तक पहुंचेंगी और आने वाले चुनावों में महिला शक्ति निर्णायक भूमिका निभाएगी। महेंद्रगढ़ से संतोष देवी, अटेली से पूर्व सरपंच अंजू बाला, नारनौल से सुनीता महरमपुर और नांगल चौधरी से सरोज स्वामी को हल्का प्रधानों की जुम्मेवारी दी गई है।

स्कूल में सीनियर्स को दी विदाई

■ सांस्कृतिक कार्यक्रमों की हुई प्रस्तुति

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नांगल चौधरी

बालाजी सीनियर सकेंडरी स्कूल भुंगारका में फेयरवेल पार्टी का आयोजन प्राचार्य हवासिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। जिसमें जूनियर विद्यार्थियों ने सीनियरों को विदाई देकर उनके उज्ज्वल भविष्य की मन्नतें मांगी। सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति से सीनियरों का अभिनंदन किया गया है। कार्यक्रम में मेधावी विद्यार्थियों को संस्था के चेयरमैन रामनिवास यादव ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया है। उन्होंने कहा कि शिक्षा का कभी भी अंत नहीं होता, जीवनभर शिक्षार्थी रहना संभव है। लेकिन समाजिक बुराइयों को मिटाकर समाज को विकसित करना शिक्षा होती है। इसके लिए युवाओं को शैक्षणिक अनुभव लेना अनिवार्य है जोकि सीनियर विद्यार्थियों से मिल सकता है। 25 फरवरी से दसवीं और बाहरवीं कक्षा की परीक्षाएं आंरभ हो जाएंगी, जिसमें उतीर्ण विद्यार्थी उच्च शिक्षण संस्थाओं में दाखिले लेंगे। उनके सम्मान में फेयरवेल पार्टी का आयोजन किया जिसमें जूनियर विद्यार्थियों को सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी।

राज्य में स्वास्थ्य सेवाएं हुई मजबूतः बबली

मंडी अटेली। ग्रीवेंस कमेटी की मेंबर एडवोकेट बबली यादव ने बताया कि स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव के नेतृत्व में राज्य में जरूरत के हिसाब से नए अस्पताल खोले और अपग्रेड किए जा रहे हैं। वहीं स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव ने प्रदेश में आपात चिकित्सा सेवाओं को और सुदृढ़ करने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। स्वास्थ्य विभाग ने 70 एडवांस्ड लाइफ सपोर्ट एंबुलेंस की खरीद को मंजूरी दे दी है जिन पर करीब 34 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। यह सभी एंबुलेंस अगले कुछ महीनों में प्रदेश को उपलब्ध हो जाएंगी। प्रदेश सरकार एवं स्वास्थ्य मंत्री प्रदेश की जनता की सेहत के सुधार के लिए प्रतिबद्ध है एवं प्रदेश की स्वास्थ्य प्रणाली को मजबूत करने के लिए लगातार काम कर रही है।

आरपीएस में 'यादों की गूंज सपनों की उड़ान' आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

आरपीएस विद्यालय में सांस्कृतिक समारोह यादों की गूंज, सपनों की उड़ान का अत्यंत उत्साह और उमंग के साथ आयोजन किया गया। कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ मुख्य अतिथि आरपीएस ग्रुप चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव, विशिष्ट अतिथि आरपीएस ग्रुप सीईओ इंजीनियर मनीष राव, डिप्टी सीईओ कुनाल राव और प्राचार्य डॉ. किशोर तिवारी द्वारा संकटमोचन बालाजी एवं विद्या की देवी मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस दौरान भव्य सांस्कृतिक व प्रेरणादायक कार्यक्रम भी विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत किए गए, जिन्हें सभी ने सराहा। चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव ने कहा कि विद्यार्थी जीवन केवल शिक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह चरित्र निर्माण की पाठशाला है। अपनी मेहनत और संस्कारों के बल पर सफलता के उस शिखर तक पहुंचें, जहां पूरा परिवार गर्व कर सके। प्राचार्य डॉ. किशोर तिवारी ने कहा कि विद्यार्थी जीवन में ही आपके सपनों की असली उड़ान शुरू होती है।

राजकीय महिला महाविद्यालय में 29 जनवरी को आयोजित की गई थी साप्ताहिक करियर चुनने की श्रृंखला

छात्राओं को एक सप्ताह तक मिला रोजगारपरक मार्गदर्शन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

नारनौल। विशेष व्याख्याता को श्रृंखला में भाग लेने पर सम्मानित करते प्राचार्य आरपी सिंह। फोटो : हरिभूमि

राजकीय महिला महाविद्यालय में प्लेसमेंट सेल की ओर छात्राओं के लिए आयोजित कैरियर चुनने, कौशल विकसित करने तथा मार्गदर्शन से संबंधित विस्तृत व्याख्यानों की श्रृंखला सफलतापूर्वक संपन्न हो गई। यह व्याख्यान की श्रृंखला गत 29 जनवरी को शुरू हुई थी, जो एक सप्ताह तक चली। इसमें विभिन्न महाविद्यालयों से विशेषज्ञ सात रिसोर्स पर्सन्स ने प्रत्येक दिन भाग लेकर व्याख्यान दिया। पहले दिन जहां इस श्रृंखला का उद्घाटन महाविद्यालय के प्राचार्य डा. आरपी सिंह द्वारा किया गया। सिंह ने कहा कि इस तरह के रोजगारपरक व्याख्यानों से छात्राओ को अपनी रुचि के अनुरूप सही रोजगार चुनने का मार्गदर्शन प्राप्त होगा। प्लेसमेंट सेल की सशक्त नोडल अधिकारी डॉ. मनमीत कौर ने बताया कि प्रथम दिन आमंत्रित रिसोर्सपर्सन ब्वॉयज कॉलेज के लेक्चरर डा. प्रो. सतीश सैनी ने 'रोल ऑफ एनईपी–2020 इन कैरियर' तथा 'जॉब ओरिएंटेड कोर्सेजः रोडमैप टू एम्प्लॉयमेंट एंड सेल्फ रिलायंस' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। दूसरे दिन रिसोर्स पर्सन डॉ. ममता सिद्धार्थ जीसीडब्ल्यू ने 'ऑपोच्यूनिटीज आफ्टर ग्रेजुएशन' तथा 'पर्सनेलिटी डेवलपमेंट' विषय पर छात्राओं का ज्ञानवर्द्धन किया। तीसरे दिन रिसोर्स पर्सन जीसी अटेली से डॉ. पवन कुमार ने 'नेट एग्जाम प्रिपरेशन एंड फ़्यूचर' तथा 'प्रिपरेशन ऑफ वेरियस टाईप्स ऑफ कम्पीटिटिव एग्जाम एंड स्कोप' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। चौथे दिन रिसोर्स पर्सन प्रिंसिपल जीसी छीलरो डॉ. कुलदीप यादव ने 'सेल्फ एम्प्लॉयमेंट ऑपोर्ट्यूनिटीज़' तथा 'एग्जामिनेशन एंड कंपीटिशंस प्रिपरेशन इन स्मार्ट वे' विषय पर अपना व्याख्यान रखा। पांचवें दिन रिसोर्स पर्सन प्रिंसिपल एमकेएनजीसी सिहमा डॉ. सुनील कुमार ने 'हाऊ टू डेवलप कम्यूनिकेशन स्किल्स' तथा 'सीवी राइटिंग एंड इंटरव्यू प्रिपरेशन' विषय पर छात्राओं का ज्ञानवर्धन किया। छठे दिन रिसोर्स पर्सन प्रिंसिपल जीसी मातनहेल (झज्झर) प्रो. सतवीर सिंह ने 'हाऊ टू प्रीपेयर फॉर एचसीएस एग्जाम' तथा 'डिजिटल लिटरेसी फॉर स्टूडेंट्स' विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

मोटिवेशन लेक्चर दिए

दो फरवरी को जिला रोजगार अधिकारी रणजीत सिंह रावत तथा युक्ति भारद्वाज ने रोजगार व जॉब संबंधित मोटिवेशन लेक्चर दिए। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आरपी सिंह ने इस व्याख्यान श्रृंखला की सफलता के लिए नोडल अधिकारी डॉ. मनमीत कौर, डॉ. सुनील कुमार एवं डॉ. अश्वनी भारद्वाज को उनके विशेष योगदान के लिये विशेष बधाई दी।

सातवें एवं अंतिम दिन रिसोर्स पर्सन जीसीडब्ल्यू नारनौल से प्रो. सुनील कुमार ने 'यूज ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस इन स्टडीज़' तथा 'जॉब ओरिएंटेड ऑनलाइन कोर्सेज' विषय पर विस्तृत व्याख्यान से छात्राओं का ज्ञानवर्धन किया तथा दूसरी करियर ऑपोर्ट्यूनिटीज के बारे में विस्तृत रूप से बताया।

नारनौल। पदाधिकारियों से बातचीत करते बसपा नेता अतरलाल।

शर्तें लगाकर काटी गई पेंशन के विरोध में आंदोलन करेगी बसपा : अतरलाल

नारनौल। बहुजन समाज पार्टी की ओर से प्रदेश द्वारा शर्तें लगाकर काटी गई बुजुर्ग, विधवा व दिव्यांगों की पेंशन को बहाल करवाने के लिए आंदोलन करेगी। उक्त घोषणा बसपा नेता अतरलाल ने पार्टी पदाधिकारियों की बैठक को सम्बोधित करते हुए की। अतरलाल ने कहा कि उन्हें प्रदेश के कोने-कोने से शिकायत मिली है कि राज्य सरकार द्वारा अनेक शर्तें लगाकर प्रदेश में लगभग साठ हजार बुढ़ों तथा पचास हजार विधवा व विकलांगों की पेंशन काट दी गई है। उन्होंने कहा कि ये बुढ़ों का सम्मान भत्ता है। इस पर बार-बार गैर वाजिब शर्तें लगाकर बुढ़ों की पेंशन काटना सरासर उनके साथ अन्याय है।

सार्वजनिक सूचना

मैं आर्मी नंबर 16021864। रैंक नायक परमेन्द्र चौधरी पुत्र अतर सिंह निवासी ढोसी तहसील खेतड़ी राजस्थान–333036 का स्थाई मूल निवासी हूं। मेरे सैन्य दस्तावेजों में माता का नाम दया कोर देवी (DAYA KOR DEVI) दर्ज है, जो गलत है। सही नाम दया कोर (DAYA KOUR) है। मेरे सेवा रिकॉर्ड में मेरी माता का नाम दया कोर (DAYA KOUR) दर्ज किया जावे।

सार्वजनिक सूचना

मैं नरेंद्र सिंह पुत्र गुलाब सिंह, वासी गांव सीहोर, तहसील कनीना, जिला महेंद्रगढ़, हरियाणा से बयान करता हूं कि मेरा पुत्र विपिन कुमार व उसकी पत्नी सपना मेरे कहने सुनने से बाहर हैं तथा परिवार में आए दिन लड़ाई झगड़ा करते हैं। इसलिए मैं इन दोनों को अपनी चल अचल संपत्ति से बेदखल करता हूं। भविष्य में इनसे लेनदेन करने वाला स्वयं जिम्मेदार होगा। मेरी व मेरे बाकी परिवार की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।

PUBLIC NOTICE

I, No.JC765260L SUB MAJ (H/CAPT) Corps of EME Vikram Singh S/o Ramprasad R/o Village-Seka, Distt. M.garh (Haryana) want to change the name of my son from Deepak to Vikash & his DOB from 24-09-1994 to 23-09-1994 in my service record.

ग्राम पंचायत, मो. भुंगारका

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत मो. भुंगारका की पांचो जोहडों में पडी मछलियों को निकालने हेतु दिनांक 09.02.2026 को प्रात: 11.30 बजे ठेका छोडा जाना है।
जिसके लिए निम्नलिखित शर्तें होंगी।
1. यह कि सिक्योरिटी राशि 5000 रूपए होगी व अन्य शर्ते मौके पर पढ्कर सुनाई जाएगी।

सरपंच ग्राम पंचायत
मो. भुंगारका

कनीना-महेंद्रगढ़ स्टेट हाईवे-24 में जगह-जगह बने गड्ढे दे रहे हादसों को बुलावा

लोक निर्माण विभाग अधिकारियों की सुस्ती पड़ रही आमजन पर भारी

- विधानसभा चुनाव से पूर्व हुआ था सड़क का नवीनीकरण
- रामपुरी डिस्ट्रीब्यूटरी उन्हाणी के समीप भी रोड की हालत पतली

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कनीना

कनीना-महेंद्रगढ़ स्टेट हाईवे 24 के जगह-जगह से द्वातिग्रस्त होने के कारण सडक हादसों की संभावना बढती जा रही है। एनएच 152 डी से कनीना होते हुए दिल्ली, झज्जर, बहादुरगढ़ की ओर जाने वाले ओवरलोड वाहनों से सड़क में जगह-जगह गड्ढे बन गए हैं जो निर्दोष वाहन चालकों की जान पर भारी पड रहे हैं। उल्लेखनीय है कि इस मार्ग का नवीनीकरण कार्य विधानसभा चुनाव 2024 से पूर्व हुआ था। जो सीमित समय में ही जर्जर हालत में पहुंच गया। रोड उधड़ने पर लोक निर्माण विभाग की ओर से इस दिशा में बीते जुलाई-अगस्त माह में प्रयास किए थे जिसके चलते ठेकेदार की ओर से कहीं-कहीं पैचवर्क कर दिया था। तत्कालीन जिला उपायुक्त डॉ विवेक भारती की ओर से वाहन चालकों व ग्रामीणों को रोड सेफ्टी का आश्वासन दिया गया था। बता दें कि कनीना में अटेली सड़क मार्ग पर रेवाड़ी-सादुलपुर रेलवे लाइन पर बनाए जा रहे आरओबी तथा माइनिंग जोन नारनौल की ओर एनएच 152डी से आने वाले अधिकतम भारी वाहन दिनरात इस मार्ग से गुजरते है। बढते यातायात दबाव के कारण सड़क की हालत पतली हो चली है। रामपुरी रजवाहे उन्हाणी के समीप लीकेज साइफन तो महेंद्रगढ़ सिंचाई विभाग के विश्राम गृह के समीप डोहान नदी के पानी से सड़क खंडित हो चुकी है। नांगल मोहनपुर के समीप सडक पर गंदा पानी जमा हो रहा है। गहरे गड्ढे बनने से सड़क दुर्घटनाओं की संभावना बन रही है।

कनीना। कनीना-महेंद्रगढ़ मुख्य मार्ग में बने गड्ढो का दृश्य तथा उन्हाणी के समीप रामपुरी डिस्टरीब्यूटरी के साइफन के समीप जर्जर सडक का दृश्य। फोटो : हरिभूमि

क्या कहते हैं कनिष्ठ अभियंता

इस बारे में लोक निर्माण विभाग के कनिष्ठ अभियंता नवल कुमार ने बताया कि कनीना-महेंद्रगढ़ मुख्य मार्ग से का सर्वे कर टूटे रोड का पैचवर्क कराया जायगा। सुरक्षित सड़क यात्रा के लिए उनकी ओर से प्रयास किए जा रहे हैं। अन्य सड़क मार्गों को भी जल्द ही दुरुस्त किया जाएगा।

नई सड़क में बरती गई अनियमितता से दुपहिया चालकों की जान जोखिम में

हाल ही में बनाए गए सीहोर-बागोत व गुढा लिंक मार्ग में अनियमितताएं बरतने के चलते सडक मार्ग में लाइनिंग बनी हुई है। जो दुपहिया वाहन चालकों की जान पर भारी पड रही है। नए बनाए गए इन सड़क मार्ग पर बनी वी-आकार लाइन पर दुपहिया वाहन चलने पर असंतुलित हो रहे है। जिनके गिरने का खतरा बहुत अधिक है। चालकों ने ठेकेदार द्वारा बेहतर तरीके से रोड की फिनिशिंग नहीं करने का आरोप लगाया है। जिससे सड़क हादसों की संभावना बढ़ रही है। उन्होंने लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों पर भी सड़क निर्माण के समय ध्यान न देने पर लापरवाही का आरोप जड़ा है।

इन्होंने रखी मांग

नांगल मोहनपुर के पूर्व सरपंच शेर सिंह आंटला, रोशन लाल, देगडा जाट के ग्रामीण मुकेश शर्मा, राजेंद्र सिंह, भूपेंद्र सिंह के अलावा वाहन चालक राजीव यादव, सुभाष चंद, एडवोकेट जितेंद्र शर्मा, राजेश कुमार, सुनील कुमार ने टूटे सड़क मार्गों का जल्द ही नवीनीकरण करने की मांग की है।

कृष्णावती नदी में डाले गए पानी से किसानों की फसल के नुकसान पर बोले डॉ. अभय

गांवों में बड़े कच्चे जोहड़ बनाए सिंचाई विभाग

- कृष्णावती नदी की क्षमता बढ़ाने के साथ ही साथ लगने वाले गांवों के लिए प्रोजेक्ट करें तैयार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

नारनौल ब्रांच से मानपुरा और राता गांवों के पास कृष्णावती नदी को नहर से जोड़ने के बाद कृष्णावती नदी में डाले गए पानी से किसानों की फसल के नुकसान पर बोलते हुए पूर्व सिंचाई मंत्री डॉक्टर अभय सिंह यादव ने बयान जारी किए है। उन्होंने कहा है कि यह दोनों परियोजनाएं कनीना एवं अटेली के बीच राजस्थान की सीमा के साथ लगने वाले इन गांवों के भूजल में सुधार के लिए विशेष रूप से बनवाई गई थी।

यह दोनों ही बड़ी योजनाएं हैं जिन पर 40 करोड़ रुपये से अधिक की राशि खर्च हुई है। तत्कालीन विधायक अटेली सीताराम यादव की सिफारिश पर यह दोनों प्रोजेक्ट बनाए गए थे। उन्होंने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि सौभाग्यवश इन दोनों ही परियोजनाओं का सफलतापूर्वक परीक्षण किया जा चुका है और बरसात की ऋतु में काफी मात्रा में मुख्य रूप से कृष्णावती नदी के इस भाग में पानी प्राप्त होगा। परन्तु इन दोनों परियोजनाओं का उपयोग पूरी क्षमता के साथ किए जाने के लिए इस पानी के भंडारण की व्यवस्था सिंचाई विभाग को करनी पड़ेगी।

नदी के तल को गहराई और चौड़ाई दोनों ही दिशाओं में बढ़ाने की ज़रूरत

कृष्णावती नदी की चौड़ाई इस क्षेत्र में कम है। अतः नदी के लिए उपलब्ध पूरी जगह में इस नदी के तल को गहराई और चौड़ाई दोनों ही दिशाओं में बढ़ाने की जरूरत है। इसके साथ ही इस नदी के आस पास लगने वाले गांवों में जहां भी पंचायत भूमि पर्याप्त उपलब्ध हो, वहां बड़े बड़े कच्चे जोहड़ खुदवा दिया जाएं, ताकि वर्षा की ऋतु में उपलब्ध होने वाले नहरी पानी को उन में भरा जा सके। डॉक्टर यादव ने कहा कि इस क्षेत्र में अधिकांश गांवों में रेतीली मिट्टी है जिसमें से धरती के नीचे पानी गति से जाता है और भूजल रिचार्ज के लिए यह क्षेत्र उपयुक्त क्षेत्र है। यहां जितनी ज्यादा जल भंडारण और जल संरक्षण के काम की व्यवस्था होगी, उतना ही क्षेत्र का भूजल रिचार्ज तेजी से होगा। उन्होंने बताया कि सिंचाई विभाग के कुछ वरिष्ठ अधिकारियों से इस विषय में बात भी हुई है और उनसे ये काम आगामी गर्मी के मौसम में पूरा करने का आग्रह किया है। पूर्व सिंचाई मंत्री ने उम्मीद जताई है कि सिंचाई विभाग इस विषय में अवश्य परिणामजनक क़दम उठाएगा। उन्होंने कहा कि यह दोनों परियोजनाएं सफलता के साथ लागू होने उपरांत जिले का कृष्णावती एवं दोहन नदियों का सम्पूर्ण क्षेत्र नहरी भूजल रिचार्ज व्यवस्था के अंतर्गत विकसित होगा। किसान के ट्यूबल पहले से अधिक सफलता के साथ चलेंगे, कृषि में ख़ुशहाली आएगी और किसान समृद्ध होगा।

महेंद्रगढ़। वीरेंद्र सिंह का स्वागत करते हुए। फोटो : हरिभूमि

वायुसेना से रिटायर्ड होने पर फ्लाइंग ऑफिसर का गांव में स्वागत

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

भारतीय वायुसेना से 38 वर्षों की गौरवशाली सेवा के बाद सेवानिवृत्त हुए फ्लाइंग ऑफिसर वीरेंद्र सिंह पुत्र महाशय रामचंद्र का उनके पैतृक गांव नौताना में पहुंचने पर ग्रामीणों द्वारा स्वागत किया गया। गांव में उनके आगमन पर देशभक्ति का माहौल देखने को मिला और लोगों ने फूल-मालाओं से उनका अभिनंदन किया।

फ्लाइंग ऑफिसर वीरेंद्र सिंह ने कहा कि देश की सेवा करना उनका बचपन से सपना था, जिसे उन्होंने पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ निभाया। उन्होंने बताया कि उनके पिता महाशय रामचंद्र ने उन्हें हमेशा देश सेवा की प्रेरणा दी। उन्होंने अपने सेवा काल के अनुभव साझा करते हुए युवाओं को देश सेवा के लिए आगे आने का संदेश दिया।

स्वागत समारोह में नरेंद्र नम्बरदार, पूर्व जिला पार्षद चन्द्रकला, राजेश कुमार, कैप्टन जगदीश प्रसाद, सूबेदार कृष्ण कुमार, मास्टर सुमेर सिंह एवं कप्तान सुरेन्द्र सिंह सहित अनेक ग्रामीण उपस्थित रहे। सभी ने फ्लाइंग ऑफिसर वीरेंद्र सिंह की सेवाओं की सराहना करते हुए उन्हें सम्मानित किया। कार्यक्रम के अंत में ग्रामीणों ने उनके उज्ज्वल भविष्य एवं स्वस्थ जीवन की कामना की।

पुलिस ने 24 घंटे के भीतर सुलझाई हत्या की गुत्थी

- जमीनी विवाद में युवक की हत्या करने वाले तीन आरोपी गिरफ्तार

महेंद्रगढ़। पुलिस ने थाना सदर क्षेत्र के गांव खातोदड़ा में जमीनी विवाद के चलते एक युवक की पीट-पीटकर हत्या करने के मामले में त्वरित कार्रवाई कर तीनों नामजद आरोपितों को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। गिरफ्तार किए गए आरोपितों की पहचान नवीन, मोहित और सोनू के रूप में हुई है, जो सभी गांव खातोदड़ा के ही रहने वाले हैं। आरोपितों को न्यायालय में पेश कर पुलिस रिमांड पर लिया गया है, पुलिस द्वारा आरोपियों से पूछताछ की जा रही है। घटना के संबंध में मृतक सोमदत के भाई प्रदीप ने पुलिस को दी गई शिकायत में बताया था कि पांच फरवरी की शाम उसका भाई सोमदत घर से बाहर गया था, लेकिन देर रात तक वापस नहीं लौटा। तलाश करने पर गांव की बणी के पास उसने देखा कि आरोपी नवीन, मोहित और सोनू उसके भाई सोमदत पर लोहे की रॉड, कील लगी फट्टियों और सरियों से हमला कर रहे थे। शिकायतकर्ता को देख आरोपित वहां से भाग निकले और जाते-जाते धमकी दी। गंभीर रूप से घायल सोमदत ने अस्पताल ले जाते समय बताया कि आरोपितों ने जमीनी रंजिश के चलते उस पर जानलेवा हमला किया है। इलाज के दौरान छह फरवरी को सोमदत की मृत्यु हो गई। पुलिस ने आरोपितों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की धाराओं के तहत मामला दर्ज कर आगामी कार्रवाई शुरू कर दी। मामले में पुलिस टीम ने तत्परता से कार्रवाई की और महज कुछ ही समय में वारदात में शामिल तीनों आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया। प्रारंभिक जांच में यह पुष्टि हुई है कि यह हत्या जमीनी विवाद को लेकर की गई थी।

मंदिर का गल्ला तोड़कर नकदी चोरी

महेंद्रगढ़। गांव रिवासा में अज्ञात चोर श्याम बाबा के मंदिर का गल्ला तोड़कर रुपये चोरी करके ले गए हैं। गांव के सरपंच ने सिटी पुलिस थाने में शिकायत देकर चोर को पकड़ने की मांग की है। पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। सरपंच महेश कुमार ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि हमारे गांव में श्याम बाबा का मंदिर है, जिसमें छह–सात फरवरी की रात को श्याम मंदिर में गल्ला तोड़कर कुछ अज्ञात चोर चोरी कर ले गए। इस घटना के बारे में जब पुजारी सुबह 04.30 बजे आया तब पता चला। पुजारी व गांव के अन्य लोगों ने फोन करके बताया और वह भी मौके पर गयाऔर देखा कि अज्ञात चोरों ने मंदिर का गल्ला तोडकर चोरी की है, जिसका अनुमान ना है कि कितने पैसे थे।

महेंद्रगढ़। रेहड़ी चालक को निर्देश देती एसडीएम। फोटो : हरिभूमि

एसडीएम ने शहर में चलाया अतिक्रमण मुक्त अभियान

महेंद्रगढ़। अतिक्रमण मुक्त महेंद्रगढ़ अभियान के तहत एसडीएम कनिका गोयल ने दुकानदारों को सड़क पर व शॉपिंग कॉम्प्लैक्स के बरामदों में अतिक्रमण ना करने के निर्देश जारी किए हैं। एसडीएम ने शहर में अतिक्रमण मुक्त अभियान चलाया और सड़कों पर सामान रखकर अतिक्रमण करने वाले दुकानदारों के चालान किए। एसडीएम कनिका गोयल ने कहा कि सड़कों पर रेहड़ी नहीं लगाना, शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के बरामदे व सड़कों पर अपना कोई भी स्थाई या बेचने वाली वस्तु नहीं रखेंगे। सभी दुकानदार अपने अधिकृत क्षेत्र में ही अपना सामान रखें जिससे आमजन को किसी प्रकार की दिक्कत का सामना न करना पड़े। एसडीएम ने कहा कि आपके इस सकारात्मक सहयोग से महेंद्रगढ़ और अधिक स्वच्छ, सुंदर और सुगम बन रहा है। सार्वजनिक मार्गों पर यदि कोई अस्थायी सामान, काउंटर या अन्य अतिक्रमण पाया गया, तो उसे तुरंत हटा लिया जाएगा। कोई भी रेहड़ी-पटरी वाला यदि सड़क से सटाकर रेहड़ी लगाता पाया गया।

साहित्यकार डॉ. तंवर मानद डॉक्टरेट की उपाधि से अलंकृत

नारनौल। हरियाणा राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित एवं वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. मक्खन लाल तंवर को पर्यावरण शिक्षा एवं संरक्षण के क्षेत्र में विशिष्ट लेखन हेतु ग्रीन इंडिया परिवार एवं एनजीआईपीएफ नाईजीरिया के संयुक्त सौजन्य द्वारा डॉक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया गया है। सम्मान पत्र में उल्लेख किया गया है कि डॉ. तंवर ने पर्यावरण शिक्षा, संरक्षण, जागरुकता एवं सामाजिक सहभागिता के माध्यम से पर्यावरण संवर्धन एवं विकास में सराहनीय योगदान दिया है। इनके कार्यों को देखते हुए इन्हें पर्यावरण क्षेत्र में मानद डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया जाता है। ग्रीन इंडिया परिवार के सीईओ डॉ. नीरज गुप्ता तथा डीपीआरएमआई नाईजीरिया के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने डॉ. तंवर के पर्यावरण साहित्य की प्रशंसा करते हुए इसे एक समर्पित भाव से किया गया उल्लेखनीय कार्य बताया है।

स्याणा गांव में गेहूं व मटर की फसल पर चलाया ट्रैक्टर, दो नामजद

कनीना। कनीना विकास खंड के गांव स्याना में ट्रैक्टर से गेहूं व मटर की फसल खुर्द-बुर्द करने के आरोप में पुलिस ने दो व्यक्तियों के खिलाफ केस दर्ज किया है। इस बारे में पीड़ित नरेश कुमार ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उनकी साझे की जमीन में उन्होंने गेहूं तथा मटर की बिजाई की हुई है। जिसे रात्रि के समय लाल सिंह व ओमप्रकाश ने ट्रैक्टर से दो एकड़ रकबा में खडे गेहूं तथा आधा एकड़ में खड़ी मटर की फसल को रद्दोबदल कर दिया। मिनी फव्वारा सिस्टम को भी क्षतिग्रस्त कर दिया। कनीना सदर थाना पुलिस ने नरेश की शिकायत पर खड़ी फसल को नुकसान पहुंचाने के आरोप में लाल सिंह व ओमप्रकाश के विरूद्ध बीएनएस की विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज कर लिया।

आज बेगपुर में निःशुल्क नेत्र जांच व ऑपरेशन शिविर

मंडी अटेली। राजकीय प्राइमरी स्कूल बेगपुर में मूर्ति देवी की पुण्यतिथि पर आठ फरवरी को निःशुल्क नेत्र जांच एवं आपरेशन शिविर का आयोजन किया जाएगा। जानकारी देते हुए डा. बिरेंद्र यादव ने बताया कि बिरेंद्र फाउंडेशन द्वारा मिश्री देवी हास्पिटल के सहयोग से रविवार सुबह नौ बजे से सायं चार बजे तक शिविर चलेगा।

In Loving Memory of
Smt. Ram Bhateri
1938 - 05 February 2026

With deep sorrow and heavy hearts, the Gehlawat family informs the peaceful passing of Smt. Ram Bhateri, aged 88, on February 5, 2026.

Born in Village Kultana, Haryana, she embraced the values of strength, grace, and devotion from a young age. She married Sepoy Dhoop Singh of 6 MAHAR Regiment, a courageous martyr and war hero of the 1962 conflict. At the tender age of 25, she became a war widow, tasked with nurturing their 8-month-old son. As the brave wife of a soldier who sacrificed his life for the nation, she shouldered her responsibilities with remarkable courage and quiet resilience. Her life stood as a testament to sacrifice, dignity, and unwavering patriotism.

Smt. Ram Bhateri was celebrated for her brave spirit, gentle wisdom, and boundless love. She raised her family with strength and compassion, imparting values rooted in integrity and affection across generations. Her warmth touched everyone who had the honor of knowing her. Though she has departed from this world, her blessings, teachings, and memories will forever remain etched in our hearts.

She is survived and will be deeply remembered by:

- Son: Lt Col Niranjan Singh Gehlawat (Retd), Director Contracts
- Daughter-in-law:Smt. Santosh Kumari, Sanskrit Lecturer (Retd)
- Grandchildren:Mr. Prince Gehlawat & Maj. Shailli Gehlawat
- Granddaughter-in-law:Mrs. Preeti Rana , Manager, SBI
- Grandson-in-law:Maj. Abhishek Singh Thakur
- Great-grandchildren:Advaita ,Advik & Tejas

She will be lovingly remembered and profoundly missed by the entire Gehlawat, Sheoran, Rana, and Thakur families.
For condolences, please contact:
- +91 9530758981
- +91 9050889557

ॐ OM SHANTI ॐ

जिलास्तरीय खेल प्रतियोगिता में खिलाड़ियों ने दिखाया शानदार प्रदर्शन

वॉलीबाल में छिलरो और खो-खो में सिहमा विजेता

- युवाओं के लिए खेल में बढ़ावा देने के लिए सरकार हरसंभव मदद के लिए तैयार : विधायक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

नारनौल। विजेता टीमों को सम्मानित करते विधायक ओम प्रकाश यादव।

माय भारत, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में शनिवार जिला स्तरीय खेल प्रतियोगिता का आयोजन लॉर्ड कृष्णा स्कूल ग्राउंड सिहमा में किया गया। प्रतियोगिता में विभिन्न ब्लॉकों के खिलाड़ियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपने खेल कौशल का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में पूर्व मंत्री एवं नारनौल विधायक ओम प्रकाश यादव ने मुख्य अतिथि के तौर पर शिरकत की।

विधायक ओमप्रकाश यादव ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि खेल युवाओं के सर्वांगीण विकास का महत्वपूर्ण माध्यम है तथा इससे अनुशासन एवं टीम भावना का विकास होता है। उन्होंने प्रतियोगिता के विजेता खिलाड़ियों एवं टीमों को स्पोर्ट्स किट एवं ट्रॉफी देकर सम्मानित किया तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

प्रतियोगिता में लड़कों के लिए ब्लॉक स्तर की विजेता टीमों के बीच वॉलीबॉल के ग्रुप मैच आयोजित किए गए, वहीं बालिकाओं के लिए खो-खो प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसके अलावा व्यक्तिगत प्रतियोगिताओं में 400 मीटर दौड़, लंबी कूद, ऊंची कूद एवं शॉट पुट प्रतियोगिताएं भी करवाई गईं।

जिला युवा अधिकारी नित्यानंद यादव ने बताया कि माय भारत का उद्देश्य युवाओं को खेलों से जोड़कर उन्हें शारीरिक एवं मानसिक रूप से सशक्त बनाना है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएं ग्रामीण स्तर पर खेल प्रतिभाओं को आगे लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कार्यक्रम के दौरान ट्रेनी जिला युवा अधिकारी विकास मीणा, विशाल धाकड़, सूरज कुमार, राज पटेल एवं तरुण पंवार ने आयोजन व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वॉलीबॉल प्रतियोगिता लड़के वर्ग में छिलरो की टीम प्रथम स्थान पर, खो-खो बालिका वर्ग में सिहमा की टीम प्रथम स्थान पर रही। कार्यक्रम के सफल संचालन में अकाउंटेंट महेंद्र सिंह, कोच उधम सिंह, यूथ वॉलंटियर्स अशोक, हरीश, अमित, अभिषेक, राहुल एवं अंकित तथा एनसीसी कैडेट्स का भी सराहनीय योगदान रहा।

haribhoomi.com

हरिभूमि रविवार भारती

छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित

आवरण कथा / सरस्वती रमेश

कई सदी पहले कबीर ने कहा था, 'ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।' वास्तव में यह शब्द और इसमें निहित मनोभाव इतना गहन, इतना विराट है कि जिसकी थाह आज तक कोई नहीं लगा पाया। लेकिन जो भी इस सुंदरतम भाव को अपने मन में संजोता है, उसका जीवन आनंद से भर उठता है। इसकी पराकाष्ठा में वह स्वयं विलीन होकर भी सब कुछ प्राप्त करने की अनुभूति करने लगता है। यही वजह है कि व्यष्टि से जन्मा प्रेम समष्टि से एकाकार हो जाता है।

जीवन का गहनतम सुंदरतम मनोभाव प्रेम

यह सही है कि बीते कई वर्षों से वैलेंटाइन-डे का क्रेज इतना बढ़ गया है कि इस वजह से पूरे फरवरी को प्रेम का महीना माना जाने लगा है। इसकी आहट के साथ ही बाजार, प्रेम के प्रतीकों से सज जाते हैं। उपहार और गुलाबों की भरमार हर ओर दिखाई पड़ने लगती है। सवाल है, क्या वास्तव में प्रेम का उपहार और बाजार से कोई लेना-देना होता है? सदियों पहले कबीर दास जी कह गए हैं-

प्रेम न बाड़ी उपजे, प्रेम न हाट बिकाई।
राजा परजा जेहि रुचे, सीस देहि ले जाई।।

वे कह गए हैं कि प्रेम का बाजार से कोई लेना-देना नहीं होता है। सच्चा प्रेम न तो खेत में और न ही भौतिक वस्तुओं से उपजता है। प्रेम तो आत्म बलिदान मांगता है। प्रेम एक सघन-गहन भावना है। इसकी खरीदी-बिक्री नहीं हो सकती। इसकी तो बस अनुभूति की जा सकती है, हृदय के गहनतम अंतःस्थल में। बाजार सिर्फ छलावा और दिखावा को पोषित करता है, प्रेम को नहीं।

गहन-असीमित है प्रेम में निहित भाव

प्रेम की संकल्पना इतनी विस्तृत और गहन होती है कि इसे किसी भाषा में मुकम्मल रूप में व्यक्त कर पाना संभव ही नहीं है। ढाई अक्षर के प्रेम शब्द की व्याख्या करने बैठो तो समुद्र की सीमाएं कम पड़ जाएं, आकाश का विस्तार बौना जान पड़े। प्रेम का स्वरूप असीम है। प्रेम की संकल्पना जितनी सरल लगती है, उतनी गूढ़ भी है। गुरुदेव रवींद्र नाथ टैगोर, प्रेम को एक अबूझ रहस्य कहते थे, क्योंकि इसे समझाने का कोई जरिया नहीं है। इसे तो वही समझ सकता है, जिसने स्वयं प्रेम किया हो। प्रेम में आत्म का बलिदान किया हो। जैसे राधा ने किया, मीरा ने किया। राधा-कृष्ण के प्रेम के गूढ़ रहस्य की व्याख्या सबने अपने-अपने तरीके से की है। युगों पहले दोनों वृंदावन की गलियों में शरीर रूप में उपस्थित रहे, पर वास्तव में दोनों का प्रेम आलौकिक, अशरीरी रहा। इसमें ना मिलन की चाह थी, ना सदैव साथ रहने की कोई इच्छा। सिर्फ स्वीकार्य भाव। कृष्ण का राधा के प्रति। राधा का कृष्ण के प्रति। राधा जानती थीं कि श्रीकृष्ण अपने कर्तव्य से बंधे हुए हैं। इसीलिए उनका प्रेम कृष्ण के पथ का कभी रुकावट नहीं बना। उनका प्रेम तो आत्मा के देवालय में प्रज्ज्वलित दीपक समान शाश्वत है। हर वक्त, हर परिस्थिति में दिपदिपा रहा है। श्रीकृष्ण के साथ रहते हुए भी और कृष्ण से दूर रहकर भी। इसकी दीप्ति में कोई कमी नहीं आती। असल में प्रेम वही है, जिसमें कोई चाह ना हो। कोई शर्त ना हो। जहां चाहना और शर्तें आईं, वहीं प्रेम व्यापार हो गया। 'तुम मुझे प्रेम करो, क्योंकि मैं तुमको प्रेम करता हूं।' जहां यह भाव आता है, वहां प्रेम सौदा बन जाता है। उसका सौंदर्य मलिन हो जाता है। प्रेम तो प्रियतम की आत्मा का विस्तार है, जिसमें अंत में प्रियतमा को भी विलीन हो जाना है। जैसे गोपियां श्रीकृष्ण के प्रेम में विलीन हो गईं। जैसे हीर, रांझा के प्रेम में विलीन हो गई। *'रांझा-रांझा करदी वे, मैं आपे रांझा होई।'*

प्रेम में चालाकी नहीं चलती

प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति के कण-कण में प्रेम रचा बसा हुआ है। प्रेम को सबसे पवित्र भावना माना गया है। प्रेम के बल पर ईश्वर को भी जीता जा सकता है। लेकिन प्रेम में चालाकी का कोई स्थान नहीं। प्रेम, स्वार्थ, गणना और छल से परे एक पवित्र भाव है। जहां चालाकी आ जाती है,वहां विश्वास का क्षय होता है और प्रेम व्यापार बन जाता है। सच्चा प्रेम न तो लाभ देखता है, न ही हानि। वह निःस्वार्थ, निष्कपट और समर्पित होता है। चालाक व्यक्ति प्रेम को अपने हित के

लिए साधन मानता है, जबकि प्रेम स्वयं में साध्य है। इसलिए प्रेम तभी शुद्ध, दीर्घकालिक और स्थायी रह सकता है, जब उसमें ईमानदारी, पारदर्शिता और सच्चाई हो। घनानंद कह गए हैं-

अति सूधो सनेह को मारग है,
जहां नेकु सयानप बांक नहीं।

प्रेम से उपजते हैं जीवन मूल्य

प्रेम हमारे जीवन का सबसे उदात्त और शाश्वत मूल्य है। यह जीवन का मूल आधार है। मनुष्य को मनुष्य बनाए रखने के लिए कुछ जीवन मूल्यों की आवश्यकता होती है। ये जीवन मूल्य प्रेम से ही उपजते हैं। प्रेम कठिन परिस्थितियों में भी जीवित रहने की शक्ति देता है। जीवन के महानतम उद्देश्य भी प्रेम के अभाव में अधूरे व निरर्थक सिद्ध होते हैं। प्रेम वह रोशनी है, जो जीवन को अर्थ व दिशा प्रदान करता है। देखा जाए तो सृष्टि के कण-कण में प्रेम समाहित है। सुबह की लालिमा, बारिश की रिमझिम बूंदें, वासंती हवाएं, फूलों में बसी सुगंध और नदियों के कल कल निर्मल प्रवाह के जरिए प्रकृति हर ओर प्रेम का संदेश प्रवाहित करती है। प्रेम वह शक्ति है, जिससे यह सृष्टि परिचालित होती है, जिसने अब तक मनुष्यता को बचा कर रखा है।

कम न हो प्रेम की महत्ता

जीवन में प्रेम का महत्व एक गहन सत्य है। प्रेम का कोई स्थानापन्न नहीं है। पूरा ब्रह्मांड प्रेम की असीम ऊर्जा व अदृश्य डोर से बंधा हुआ है। लेकिन बीते कुछ दशक से प्रेम के मूलाधार में कुछ अशक्तता आई है। विश्वास, करुणा, बलिदान, समर्पण जैसे भावों में संकुचन दिखलाई पड़ा है। नित्यप्रति एकाकी होती व स्व में सिमटती जा रही दुनिया के लिए प्रेम के विस्तार को जानना, समझना आज और भी आवश्यक हो गया है। *

विज्ञान की नजर में प्रेम

प्रेम, दुनिया की सबसे कोमल लेकिन सबसे शक्तिशाली भावना भी है। एक खूबसूरत पर जीवन का रूपांतरण करने वाला अहसास है प्रेम। इस अहसास को विज्ञान अपने नजरिए से व्याख्यायित करता है। विज्ञान कहता है कि हमारे हृदय में प्रेम की चिंगारी जलाने के लिए डोपामाइन हार्मोन जिम्मेदार है। जब हम किसी के प्रति अपनापन महसूस करते हैं, उससे गले मिलते हैं तो हमारे शरीर में ऑक्सीटोसिन नामक हार्मोन भी निकलता है। वहीं दिल की धड़कन बढ़ने पर एड्रेनेलिन नामक हार्मोन निकलता है। इन हार्मोंस के अधिक मात्रा में निकलने के कारण व्यक्ति को विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण या अपनेपन की भावना महसूस होती है। यही हार्मोंस दिमाग में प्यार का अनुभव कराते हैं। हालांकि मनोवैज्ञानिक यह मानते हैं कि प्रेम को सिर्फ हार्मोन के जरिए समझना आसान नहीं है, क्योंकि प्रेम में जितनी इनकी भूमिका होती है, उतनी ही आपसी समझ, देखभाल, त्याग, भरोसा और भावनात्मक लगाव की भी भूमिका होती है। हार्मोन का काम तो कुछ देरी का होता है। लेकिन भावनाएं लंबे समय तक काम करती हैं और एक-दूसरे से जोड़कर रखती हैं। जिस तरह शरीर के लिए भोजन, पानी और गतिशीलता की जरूरत होती है, ठीक वैसे ही मस्तिष्क के लिए प्रेम की।

शोर कम-समझ ज्यादा बदल रहे प्यार के मायने

भले ही एक वर्ग के लिए वैलेंटाइन-डे प्रेम के इजहार और उल्लास का पर्व है। लेकिन युवाओं में ही एक वर्ग ऐसा भी है, जो प्यार के इस उत्सव को भी सहजता से मनाता है। उनके लिए प्रेम, दिखावा नहीं साझेदारी और समझदारी का रिश्ता बन चुका है।

नया दौर

डॉ. अनिता राठौर

सुबह के 7 बजे हैं। एक छोटे से फ्लैट में दो लोग रोज की तरह अपने अपने लैपटॉप खोलकर दिन की शुरुआत करने लगते हैं। जबकि उस दिन 14 फरवरी है यानी, प्रेम का दिन, वैलेंटाइन-डे। लेकिन आस-पास न कहीं गुलाब है, न कोई मोमबत्ती है और न आपस में कोई फिल्मी डायलॉग बोले जाते हैं। हां, टेबल पर रखी दो कप चाय और एक-दूसरे की तरफ बढ़ा हुआ हल्का-सा मुस्कुराता चेहरा। आप भले न यकीन करें, लेकिन सच है कि परिपक्व सोच रखने वाले बहुत से युवा युगलों का प्यार, शांत-सजग-व्यावहारिक और भरोसे से भरा हुआ हो चुका है। आज का प्यार, दो दशक पहले जैसा नहीं रहा। यानी, एक वर्ग के लिए प्रेम ने अपना रूप बदला है। लेकिन गहराई नहीं खोई। प्रेम अब दिखावे से निकलकर समझदारी, व्यावहारिकता और लाइफस्टाइल के संग आ गया है। इसमें मानसिक सुरक्षा भी पहले से कहीं ज्यादा शामिल हो चुकी है।

अब भावना नहीं साझेदारी

आज की समझदार पीढ़ी के पास प्यार को सिर्फ फीलिंग के रूप में देखने की न तो जरूरत है और न ही इतनी फुर्सत। उनके लिए प्यार, साझेदारी का नाम है। जीवन की जिम्मेदारियों का नाम है। मिलकर उठाई जाने वाली जिम्मेदारियां। इसलिए आज के कपल मिलकर करियर की योजना बनाते हैं। खर्च और बचत पर खुलकर बात करते हैं। घरेलू और बाहरी जिम्मेदारियों को ईमानदारी से बांटना स्वीकार करते हैं और मुश्किल समय में एक-दूसरे का सहारा बनते हैं। आज के समय में, 'तुम मुझसे कितना प्यार करते हो?' से ज्यादा यह अहम हो गया है, 'हम एक-दूसरे के लिए कितने भरोसेमंद हैं?'

स्पष्टता है सबसे बड़ी खूबी

आज कपल्स के प्यार में जितनी स्पष्टता है, इतनी पहले कभी नहीं रही और यही आज के प्यार की सबसे बड़ी खूबी है। कपल अब यह कहने से नहीं डरते कि वो चाहते क्या हैं और साफ-साफ बताते हैं कि वो क्या नहीं चाहते? मसलन- उन्हें शादी करनी है या नहीं। बच्चे चाहिए या नहीं। एक-दूसरे के लिए कितना स्पेस चाहिए और सबसे बड़ी बात यह है कि वो किस तरह का जीवन जीना चाहते हैं? याद रखिए, यह स्पष्टता रिश्तों को तोड़ती नहीं है बल्कि ज्यादा मजबूत बनाती है, क्योंकि भ्रम पर टिके रिश्ते बहुत जल्दी थक जाते हैं और सच्चाई के सहारे आगे बढ़ने वाले रिश्ते दूर तक जाते हैं।

अब प्यार का हिस्सा है मेंटल हेल्थ

आज के युवा इस बात को भली-भांति जानते हैं कि उनका मानसिक स्वास्थ्य भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना कि शारीरिक। इसलिए अब पार्टनर्स एक-दूसरे की थकान को समझते हैं। एंग्जाइटी और तनाव पर बिना झिझक खुलकर बात करते हैं और जरूरत पड़ी तो प्रोफेशनल्स की मदद लेने से न झिझकते, न कतराते हैं।

आज के युवा एक-दूसरे से बड़ी सहजता से कहते हैं, आज मेरा मन ठीक नहीं है। क्योंकि वो जानते हैं कि उनके इस वाक्य को गलत शब्द और संदर्भ में नहीं लिया जाएगा। पुरानी पीढ़ी के लोग भले टेक्नोलॉजी को कितना कोसते हों, लेकिन युवाओं के लिए टेक्नोलॉजी अलगाव का नहीं जुड़ाव का माध्यम है। भले पुरानी पीढ़ी के लोग मानते हों कि मोबाइल और इंटरनेट रिश्तों का दुश्मन है। लेकिन आज के दौर में प्यार करने वाले युवा इस बात से कतई सहमत नहीं हैं। इसलिए वो वीडियो कॉल के साथ भी खाना खाते हैं। एक-दूसरे को वॉयस नोट्स भेजते हैं, उनकी प्लेलिस्ट साझा होती है और हां, ऑनलाइन कैलेंडर में डेट-नाइट भी फिक्स करते हैं। उनके लिए टेक्नोलॉजी केवल टाइम पास का जरिया नहीं दिलों की दूरी कम करने के नए रास्ते भी खोलती है।

बराबरी है रिश्तों की बुनियाद

आज के प्रोफेशनल युवा यह मानते हैं कि रिश्ता मालिकाना हक नहीं बराबरी का संबंध है, इसलिए बिना झिझक और बिना किसी हैंगओवर के घरेलू काम दोनों मिलकर करते हैं। सारे फैसले मिलकर लेते हैं। एक-दूसरे के करियर को बराबर का सम्मान देते हैं। आज के युवाओं के बीच 70 के दशक की फिल्मों के यह डायलॉग शायद ही कहीं सुनने को मिलते हों, 'मैं तुम्हारे बिना कुछ नहीं हूं।' बल्कि इसकी जगह आज यह डायलॉग आम है, 'मैं तुम्हारे साथ और बेहतर बनता-बनती हूं।' आज के प्यार की मजबूती सेल्फ लव है, क्योंकि अब नई पीढ़ी को यह बात बहुत अच्छी तरह से समझ में आती है कि खुद से प्यार करना स्वार्थ नहीं, प्यार की समझ होना है। इसलिए आज के युवा अपने शौक के लिए समय निकालते हैं, अपने रिश्तों की सीमाएं तय करते हैं और हर वक्त उपलब्ध रहने की मजबूरी से दूर रहते हैं। क्योंकि जब कोई खुद संतुलित होता है, तभी किसी रिश्ते में स्वस्थ योगदान दे पाता है।

लब्बोलुआब यह कि आज वैलेंटाइन-डे केवल गिफ्ट्स एक्सचेंज का दिन नहीं रहा। यह समझदारी भरी बातचीत का दिन है, यह एक-दूसरे को ध्यान से सुनने का दिन है, यह भविष्य की योजनाएं साझा करने का दिन है और यह आभार जताने का भी दिन है। आज के युवा इस दिन साथ बैठकर एक-दूसरे के लिए प्यार और मनुहार के गीत नहीं गाते, अपने साझा लक्ष्य तय करते हैं। फाइनेंशियल प्लानिंग बनाते हैं, क्योंकि प्यार की नई भाषा और नई परिभाषा यही है। *

कविता

आरती आस्था

प्रेमानुभूति

मुझे नहीं आता
करना प्रेम
बांधकर इसे सीमाओं में
सच कहूं तो
करने-कराने जैसी शय भी
लगी नहीं मुझे कभी प्रेम
प्रेम तो नाम है बिखरने का
खुद को बिखराने का
कितना भी बिखरो इसमें
बिखराओगे भी चाहे जितना
करते रहते हैं हम
प्रेमानुभूति से
समृद्ध-संपन्न-संपूर्ण
खुद को ही।

व्यंग्य / अंशुमाली रस्तोगी

इश्क की शमा जलाए रखिए

इधर कुछ दिनों से नेगेटिव होना-सोचना कतई छोड़ दिया है मैंने। ज्यादातर पॉजिटिव ही रहता हूं। देश-दुनिया की फिक्र उतनी ही करता हूं, जितना मेरा दिमाग इजाजत दे। मूड को कूल रखता हूं। दिल बहलाने के लिए, कभी-कभार, पूर्व प्रेमिका के खतों को पढ़ लिया करता हूं। उसके भेजे वैलेंटाइन-डे के काड्र्स आज भी मन में उमंग भर देते हैं। क्या जमाना था वो। तब न सोशल मीडिया की लत थी, न गैजेट्स का शोर। सुकून के साथ इश्क का इजहार भी हो जाता था और इनकार भी। न किसी के खत वायरल होते थे, न किसी की इज्जत खराब होती थी। हां, जिनके दिल टूटते थे, वे खुद से ही जोड़ भी लेते थे। वो छत और गली-मोहल्ले वाला इश्क रह-रहकर दिल को उसी खुशनुमा दौर में लिए जाता है। खैर, आज के दौर में तो वैलेंटाइन-डे सोशल मीडिया पर शुरू होकर यहीं खत्म हो जाता है। इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप पर इजहार हो जाता है और यहीं इनकार भी। अब स्क्रीनशॉट वायरल होते हैं। वर्चुअल लड़ाई-झगड़े होते हैं। फिर कब, कौन, कहां, किसके साथ डेट पर चल देता है, कुछ पता ही नहीं चलता। लंबे मगर खूबसूरत इश्क शायद ही निभाए या चल पाते हों अब।

बदलते दौर को देख मैंने भी अब खुद को लगभग बदल लिया है। एआई की शरण में हूं। उससे पूछ रहा हूं कि 'नई प्रेमिका संग वैलेंटाइन-डे कैसे मनाऊं?' एआई बता रहा है, 'पहले उसको व्हाट्सएप पर अच्छा-सा मैसेज लिखो। फोन पर रोमांटिक बातें करो। शाम का टाइम फिक्स कर साथ कॉफी पीना तय करो। हां, साथ एक बुके जरूर ले जाना। इतने से ही आपका दिन बन जाएगा।' प्रेमिका चूंकि नए जमाने की है। उसके नाज-नखरे कुछ अलग हैं। दिल पर तुरंत ले लेती है। अटेंशन पूरी चाहती है। इश्क को कविता की मानिंद लेती है। इसलिए ध्यान भी खास रखना पड़ता है। नया-नया मामला है। नहीं चाहता वैलेंटाइन-डे पर पानी फिर जाए।

साथी लोग समझाते हैं, इस उम्र में तुम्हें इश्क में नहीं पड़ना चाहिए। मैं उनसे पूछता हूं, 'क्यों? इश्क की कोई उम्र नहीं होती। जब दिल चाहे इश्क कीजिए। एक से कीजिए या अनेक से, यह निर्भर आपकी जिंदादिली पर। यों भी, इश्क करते रहने से उम्र बढ़ती ही है, कम नहीं होती। इश्क दिल-दिमाग को मजबूत बनाता है। इश्क में नमक भी होता है मिठास भी। वैलेंटाइन बाबा इस हकीकत को बहुत अच्छे से जानते-समझते थे।'

नेगेटिविटी का साथ छोड़ पॉजिटिव बनिए। जितना पॉजिटिव रहेंगे, उतना ही इश्क परवान चढ़ेगा। मैं पॉजिटिविटी का दामन थामे हुए हूं। तकनीक के साथ पॉजिटिव वैलेंटाइन मनाने में यकीन रखता हूं। माना कि इश्क करने के मायने-तरीके बदल चुके हैं अब, पर जज्बा तो साथ है न। काफी है। अकसर सोचता हूं, जिनकी प्रेमिकाएं नहीं होतीं, उनका जीवन कितना नीरस रहता होगा? न कोई रोमांस, न कोई उमंग, न कोई टशन। वैलेंटाइन-डे आए या चला जाए उनकी सेहत पर क्या फर्क!

पुनः कह रहा हूं, इश्क की शमा दिल में जलाए रखिए। शाम होने का इंतजार न कीजिए। जीवन जितना मिला है, इश्क के हवाले कर दिमाग को स्ट्रेस-फ्री रखिए। प्रेमिका के लिए शेर कहते रहिए। कविताएं लिखते रहिए। हर वैलेंटाइन साथ जुड़े रहिए। इश्क का रंग गाढ़ा होता रहेगा, यकीन मानिए। और हां, इश्क के साथ अक्ल कतई न लगाएं। अक्ल इश्क की नजाकत का मजा किरकिरा कर देती है।

बकौल अकबर इलाहाबादी साहब-
इश्क नाजुक-मिजाज है बेहद
अक्ल का बोझ उठा नहीं सकता। *

लघुकथा / डॉ. अलका जैन 'आराधना'

सच्चा प्यार

शहर की भाग-दौड़ और वैलेंटाइन-डे के शोरगुल से दूर, माधव अपने बगीचे में लगे उन पौधों को निहार रहे थे, जो वसंत की दस्तक से खिलखिला उठे थे। तभी उनकी पत्नी सावित्री, रसोई से अदरक वाली चाय लेकर बरामदे में आईं और हल्की मुस्कान के साथ माधव को चाय का प्याला थमाते हुए वहीं बैठ गईं।

तभी घर के दरवाजे की घंटी बजी। उनका बेटा और बहू हाथ में फूलों का एक बड़ा गुलदस्ता और केक लेकर भीतर आए। उन्होंने उत्साह में कहा, 'हैप्पी वैलेंटाइन-डे मम्मी-पापा!' माधव और सावित्री ने एक-दूसरे की ओर देखा। उनकी आंखों में एक-दूसरे के प्रति अगाध सम्मान था। बहू ने उत्सुकता से पूछा, 'पापा जी, आप आज मम्मीजी को क्या गिफ्ट दे रहे हैं?'

माधव ने अलमारी के दराज से एक पुराना, पीला पड़ चुका लिफाफा निकाला और सावित्री के हाथों में पकड़ा दिया। जब सावित्री ने उसे खोला तो उसमें उन तमाम जगहों की सूचियां और प्यारी तस्वीरें थीं, जहां वे पिछले चालीस सालों में साथ घूमने गए थे। माधव ने गरिमापूर्ण स्वर में कहा, 'मेरा उपहार उन हसीन पलों से जुड़ी वो यादें हैं सावित्री, जो हमने एक-दूसरे के साथ बिताई थीं।' यह देख-सुनकर सावित्री की आंखों में खुशी के आंसू छलक आए। उनके बेटे-बहू को एहसास हो गया कि सच्चा प्यार क्या होता है! *

पत्रिका चर्चा / विज्ञान भूषण

प्रेम कथा अनंता

जिस तरह से ईश्वर और उसकी कथा का कोई अंत नहीं है, उसी तरह प्रेम की कथा भी अनंत है। यही वजह है कि विश्व साहित्य में आरंभ से ही प्रेम पर असंख्य कविताएं और कहानियां लिखी जाती रही हैं, लेकिन यह सिलसिला आज भी अनवरत जारी है। हिंदी जगत की अनेक पत्रिकाएं भी प्रेम पर केंद्रित विशेषांक निकालती रही हैं। इसी क्रम में 'निकट-43' का ताजा अंक आत्मकथात्मक प्रेमकथा विशेषांक के रूप में प्रकाशित होकर आया है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता तो यही है कि इसमें छपी सभी प्रेम कहानियां आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई हैं। यही वजह है कि इसमें प्रकाशित कहानियों में प्रेम, रचनाकार के आत्म से संपृक्त, बहुत सांद्र रूप में प्रकट हुआ है। इसमें कुछ आलेखों, कविताओं, एक संस्मरण और तेरह प्रेम कहानियों के अलावा संपादक कृष्ण बिहारी की लंबी कहानी 'एक शिकायत विहीन प्रेमकथाः अनागत' भी मौजूद है। अधिकांश कहानियां हमें एंद्रिकता से बहुत दूर प्रेम के देखे-अनदेखे भावजगत की ऐसी यात्रा पर ले चलती हैं, जहां प्रेमी और प्रेमिका के भीतर कुछ पाने की लालसा नजर नहीं आती है। वे सिर्फ एक-दूसरे के संग होने, हासिल पलों के जीने को ही प्रेम का प्रतिफल मान लेते हैं। प्रियंवद और जया जादवानी की कहानियां प्रेम को अलग ही कोण से प्रकट करती हैं तो कृष्ण बिहारी की कहानी प्रेम का नया व्याकरण रचती है। इनके अलावा कल्पना मनोरमा, पंकज सुबीर, कविता विकास, लता शर्मा और पूनम मनु की कहानियां भी अपने भावभीने कथानक और मुलायमियत भरी अभिव्यक्ति से मन में ठहर जाती हैं। अन्य कहानियां भी बेहद पठनीय हैं। ये कहानियां साबित करती हैं कि हिंसा और युद्ध की विभीषिका से आक्रांत आज के विश्व में मनुष्यता को बचाए रखने की सामर्थ्य केवल प्रेम में ही है। *

पत्रिकाः निकट-43 (आत्मकथात्मक प्रेमकथा विशेषांक),
संपादकः कृष्ण बिहारी, मूल्यः 50 रुपए

बेमिसाल / शिखर चंद जैन

दुनिया भर में अलग-अलग स्थानों पर प्रेम के ऐसे स्मारक मौजूद हैं, जो अमर प्रेम की कहानियों के गवाह हैं। ये ऐतिहासिक स्मारक न केवल अब विश्व धरोहर माने जाते हैं, बल्कि पर्यटकों को आकर्षित भी करते हैं। प्रेम को समर्पित ये शानदार निशानियां, हर प्रेमी युगल को प्रेरित भी करते हैं। इनमें से कुछ के बारे में जानिए।

अद्वितीय-लाजवाब-शानदार
विश्व प्रसिद्ध प्रेम के स्मारक

बोल्ट कैसल अमेरिका

बोल्ट कैसल एलेक्जेंड्रिया बे, न्यूयॉर्क में हार्ट आइलैंड पर स्थित एक शानदार ऐतिहासिक महल और लोकप्रिय पर्यटन केंद्र है। इसे जॉर्ज सी बोल्ट ने अपनी पत्नी लुईस के लिए, अपने प्यार की निशानी के तौर पर बनवाना शुरू किया था। लेकिन लुईस के निधन के बाद यह अधूरा रह गया। यह एक छह मंजिला, 120 कमरों वाली राइनलैंड शैली की संरचना है, जिसमें सुरंगें, इटालियन उद्यान, एक ड्रॉब्रिज और एक ओएस्टर टॉवर नामक बच्चों का प्लेहाउस भी है। इसका निर्माण 1900 में शुरू हुआ था, लेकिन जनवरी 1904 में लुईस की अचानक मृत्यु के बाद, जॉर्ज बोल्ट का मन टूट गया। फिर उन्होंने इसे अधूरा छोड़ दिया। लेकिन यह अधूरा स्मारक, प्रेम की निशानी के तौर पर दुनिया भर में जाना जाता है।

शैटो डी चेनोंसो फ्रांस

महिलाओं का महल कहे जाने वाले इस महल की दीवारों में कई प्रेम कहानियां और रानियों के किस्से छिपे हैं। शैटो डी चेनोंसो को अकसर 'प्यार और प्रतिद्वंद्विता की निशानी' के रूप में देखा जाता है। इसकी कहानी एक प्रसिद्ध शाही प्रेम त्रिकोण से संबंधित है।

दरअसल, वर्ष 1547 में फ्रांस के राजा हेनरी द्वितीय ने इस महल को अपनी प्रेमिका डायने डी पोइटियर्स को उपहार स्वरूप दिया था, जिनसे वह गहरा प्रेम करते थे। डायने ने ही शेर नदी पर वह प्रसिद्ध मेहराबदार पुल बनवाया था, जो आज इस महल की सबसे बड़ी पहचान है। लेकिन हेनरी की मृत्यु के बाद, उनकी पत्नी रानी कैथरीन डी मेडीसी ने ईर्ष्यावश डायने को इस महल से निकाल दिया और खुद इस पर कब्जा कर लिया।

जूलियट का घर इटली

इटली देश के वेरोना में स्थित 'कासा डी गियुलिएट्टा' विलियम शेक्सपियर के पात्रों रोमियो और जूलियट के अमर प्रेम की याद दिलाता है। जूलियट का घर कासा डि गियुलिएट्टा, 13वीं सदी की एक ऐतिहासिक इमारत है। यह प्रसिद्ध 'रोमियो और जूलियट' नाटक से प्रेरित एक प्रमुख पर्यटक स्थल है, जहां आंगन में आइकॉनिक बालकनी और जूलियट की कांस्य मूर्ति है। हालांकि जूलियट एक काल्पनिक पात्र है, लेकिन यह घर रोमांस के प्रतीक के रूप में प्रसिद्ध है। जूलियट की मूर्ति के बारे में ऐसी मान्यता है कि मूर्ति के दाहिने हाथ को छूने से प्यार में सौभाग्य मिलता है।

कोरल कैसल अमेरिका

आपको जानकर हैरानी होगी कि एक अमेरिकी व्यक्ति एडवर्ड लीडस्कैलनिन ने अपनी प्रेमिका के लिए कोरल कैसल नामक भवन खुद ही अकेले बनाया था। यह उसके प्रेम की अटूट शक्ति को दर्शाता है। फ्लोरिडा के होमस्टेड में स्थित कोरल कैसल एक रहस्यमयी पत्थर का ढांचा है, जिसे लैटिन अमेरिकी प्रवासी एडवर्ड लीडस्कैलनिन ने 1923-1951 के बीच अकेले बनाया था। 1,100 टन से अधिक कोरल चट्टान से निर्मित, इस संरचना में तराशे गए कई बड़े पत्थर, दीवारें और फर्नीचर शामिल हैं, जिसे 'फ्लोरिडा का स्टोनहेंज' भी कहा जाता है। एडवर्ड का कद मात्र 5 फीट और वजन 100 पाउंड था, फिर भी उन्होंने बिना किसी आधुनिक मशीनरी के लगभग 1,100 टन वजनी पत्थरों को काटकर और तराशकर यह महल खड़ा किया था। उन्होंने यह काम लगभग 28 वर्षों तक गुप्त रूप से किया। दरअसल, अपनी मंगेतर (एग्नेस) द्वारा शादी से एक दिन पहले रिश्ता तोड़ देने के बाद, टूटे दिल के साथ एडवर्ड ने इसे एक प्रेम स्मारक के रूप में बनाया था।

एलेनोर क्रॉसेस इंग्लैंड

एलेनोर क्रॉसेस, 13वीं शताब्दी के अंत में इंग्लैंड के राजा एडवर्ड प्रथम द्वारा अपनी पत्नी एलेनोर ऑफ कैस्टिले की याद में बनवाए गए 12 क्रॉस मेमोरियल हैं। वर्ष 1290 में एलेनोर की मृत्यु के बाद, दुःखी होकर राजा ने उनके अंतिम संस्कार की यात्रा के दौरान लिंकन से लंदन के बीच प्रत्येक पड़ाव (रात्रि विश्रामस्थल) पर पत्थर के ये भव्य क्रॉस बनवाए थे। इनमें से अब केवल तीन- गेडिंगटन, हार्डिंगस्टोन और वाल्थम, मूल रूप में बचे हैं। *

सबसे अनोखा ताजमहल-शालिमार बाग

अपने देश भारत में भी प्रेम की दो बेमिसाल निशानियां मौजूद हैं। मुगल सम्राट शाहजहां द्वारा अपनी पत्नी मुमताज महल की याद में बनाया गया सफेद संगमरमर का मकबरा ताजमहल, दुनिया में प्यार का सबसे बड़ा प्रतीक माना जाता है। ताजमहल, भारत ही नहीं दुनिया भर में निस्संदेह 'प्यार की सबसे खूबसूरत निशानी' माना जाता है। इसका निर्माण 1631 में शुरू हुआ और 1653 में पूरा हुआ। इसे बनाने में लगभग 22,000 मजदूरों और शिल्पकारों ने काम किया था। इसे राजस्थान के मकराना से लाए गए शुद्ध सफेद संगमरमर से बनाया गया, जिस पर कीमती पत्थरों की पच्चीकारी की गई है।

शालिमार बाग को मुगल बादशाह जहांगीर ने 1619 में अपनी पत्नी नूरजहां के लिए बड़े मन से बनवाया था। शालिमार बाग, श्रीनगर (जम्मू और कश्मीर) में स्थित एक प्रसिद्ध मुगल गार्डन है, जिसे 'श्रीनगर का ताज' भी कहा जाता है। यह बाग 'चहार बाग' शैली पर आधारित है और तीन छतों में विभाजित है, जो जल निकायों और फव्वारों से सुसज्जित है। यहां मौजूद चिनार के पेड़, रंग-बिरंगे फूल, दीवान-ए-खास और दीवान-ए-आम जैसे मंडप, पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। यह डल झील के दाहिने किनारे पर स्थित है और यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की अस्थायी सूची में शामिल है।

प्रेम की भावना को व्यक्त करते प्रतीक

प्रेम की गहरी भावना को व्यक्त करने के लिए पुराने दौर से ही कई तरह के प्रतीकों का सहारा लिया जाता रहा है। प्रेमी युगल के बीच प्रचलित प्रेम के कुछ प्रतीकों के बारे में आप भी जरूर जानना चाहेंगे।

मान्यता / अंजू जैन

प्रेमी या प्रेमिका को जब अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए शब्द नहीं सूझते या फिर वे ज्यादा प्रभावशाली तरीके से प्यार का इजहार करने की चाहत रखते हैं तो ऐसे प्रतीकों का सहारा लेते हैं, जो बिना कुछ कहे उनके दिल में उमड़ रही प्यार की भावनाओं को व्यक्त कर देते हैं। ऐसे ही कुछ प्रतीकों पर एक नजर-

वीणा: वीणा केवल संगीत का वाद्ययंत्र ही नहीं है, यह अपने मधुर सुरों के माध्यम से भावनात्मक जुड़ाव और प्रेम के गहरे पहलुओं को भी प्रकट करती है। वीणा को प्रेम, शांति और सद्भाव का एक महत्वपूर्ण प्रतीक माना जाता है। भारतीय संस्कृति और विभिन्न वैश्विक परंपराओं में इसके अलग-अलग प्रतीकात्मक अर्थ हैं। नॉर्वे और आइसलैंड की परंपराओं में माना जाता है कि वीणा के तार एक सीढ़ी बनाते हैं, जो प्रेम और आध्यात्मिक चेतना की उच्च अवस्थाओं तक पहुंचने का मार्ग है। वीणा की मधुर ध्वनि को अकसर प्रेम के गीतों और आकर्षण से जोड़ा जाता है।

रोज क्वाट्र्ज: रोज क्वाट्र्ज को मुख्य रूप से निःस्वार्थ प्रेम, करुणा और भावनात्मक उपचार के पत्थर के रूप में जाना जाता है। यह कोमल गुलाबी रंग का क्रिस्टल हृदय चक्र से गहराई से जुड़ा होता है, जो आत्म-प्रेम रोमांटिक रिश्तों में सुधार, मित्रता और पारिवारिक प्रेम को बढ़ावा देने के लिए उपयोग किया जाता यह प्रेम के सभी रूपों को आकर्षित करता है, प्रेम के टूटे रिश्तों को जोड़ने में मदद करता है। यह प्रेमियों के बिछड़ने से होने वाले दर्द, भावनात्मक पीड़ा और तनाव को दूर करने में सहायक है। वैवाहिक जीवन में शांति और प्रेम बढ़ाने के लिए इसे बेडरूम के दक्षिण-पश्चिम दिशा में रखना शुभ माना जाता है। यह शुक्र ग्रह से संबंधित है, जो रोमांस, सौंदर्य और कलात्मकता को बढ़ाता है।

हंस: हंस अपनी वफादारी, समर्पण और आजीवन साथ निभाने के स्वभाव के कारण प्रेम, निष्ठा और पवित्रता का प्रतीक माने जाते हैं। इन्हें अकसर एक-दूसरे के साथ कपल के रूप में देखा जाता है, जो गहरे प्रेम और रोमांस का प्रतीक है। वे अपने साथी के प्रति जीवन भर प्रतिबद्ध रहते हैं और एक-दूसरे के साथ गर्दन मोड़कर दिल के आकार की आकृति भी बनाते हैं। इनके बीच इतना गहरा लगाव होता है कि लोग अकसर प्रेमी जोड़ों को 'दो हंसों का जोड़ा' कहते हैं।

सेब: सेब ऐतिहासिक और पौराणिक रूप से प्रेम, सुंदरता और उर्वरता का एक शक्तिशाली प्रतीक है। ग्रीक और रोमन कथाओं में यह प्रेम की देवी एफ्रोडाइट वीनस से जुड़ा है। एफ्रोडाइट प्राचीन यूनानी पौराणिक कथाओं में प्रेम, सौंदर्य, इच्छा और प्रजनन क्षमता की मुख्य देवी थीं। रोमन पौराणिक कथाओं में उन्हें 'वीनस' के रूप में जाना जाता है। वीनस, अकसर सेब धारण किए हुए चित्रों में दिखाई देती हैं। सेब को 'प्रेम का फल' भी माना जाता है। यह अकसर काम भाव और गहरे भावनात्मक जुड़ाव का प्रतिनिधित्व करता है।

इनफिनिटी चिन्ह: इनफिनिटी चिन्ह, क्षैतिज आठ की आकृति जैसा दिखता है और शाश्वत प्रेम, अटूट बंधन व समर्पण का सार्वभौमिक प्रतीक है। इसका मतलब है वह प्यार जिसका न कोई आरंभ है और न कोई अंत। यह एक गहरा भावनात्मक प्रतीक है, जो समय और स्थान से परे शाश्वत संबंध और कभी न खत्म होने वाली प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह प्रेमी जोड़ों या परिवार के सदस्यों के बीच के स्थायी और मजबूत संबंध का प्रतिनिधित्व करता है। इसका उपयोग आभूषणों (अंगूठी, नेकलेस, ब्रेसलेट), टैटू और उपहारों में किया जाता है ताकि अपने स्नेह की गहराई को व्यक्त किया जा सके। *

आमतौर पर माना जाता है कि अगर आप सिंगल हैं यानी आपका कोई लव या लाइफ पार्टनर अब तक नहीं है तो वैलेंटाइन-डे आपको मायूस कर देगा। लेकिन ऐसा नहीं है। आप अलग अंदाज में अपने साथ ही वैलेंटाइन-डे मना सकते हैं।

सिंगल हैं तो क्या हुआ
खुद के साथ करें सेलिब्रेट

अलग नजरिया / नम्रता नदीम

हर वर्ष 14 फरवरी यानी वैलेंटाइन-डे पर सोशल मीडिया कपल्स की तस्वीरों से भरा रहता है। माना जाता है कि ऐसे लोग जो किसी के साथ रिलेशनशिप में नहीं हैं, उन्हें यह दिन काफी चुभता है, इस दिन उन्हें अकेलेपन की पीड़ा भीतर तक सालती है। अगर आपका भी कोई पार्टनर नहीं है, आप खुद को अधूरा महसूस करते हैं तो यह सोच सही नहीं है। हम आपको बताते हैं कि कैसे अपने अकेलेपन को दूर कर, यह दिन मना सकते हैं?

खुद से ही प्यार करें

अगर आपके साथ कोई साथी न हो तो खुद को ही अपना वैलेंटाइन बनाएं। खुद को गिफ्ट करें। अकेले जाकर किसी रेस्टोरेंट में खुद को ट्रीट दें। दूसरे लोगों को एक साथ देखकर उनसे अपनी तुलना करके परेशान न हों। इससे अगर कोई आपके साथ न भी हो तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

क्या हुआ जो बैचलर हैं

अगर आपने अभी तक शादी के लिए किसी का चुनाव नहीं किया या कोई ऐसा पार्टनर आपको नहीं मिला, जिसके साथ आप जीवनभर चलने का संकल्प ले सकें, तो क्या हुआ? आप अपनी इच्छा से सिंगल हैं। इसमें गम मनाने की तो कोई बात नहीं। सिंगल्स के ग्रुप को ज्वाइन करें और अपने सिंगल हुड को एंज्वाय करें।

शादीशुदा भी तो खुश नहीं

अगर आपने अभी तक शादी नहीं की या किसी के साथ रिलेशनशिप में नहीं हैं तो उनके बारे में सोचो, जो कपल्स शादी करके भी अकसर परेशान रहते हैं। उनसे पूछकर देखें तो वो बताएंगे कि जिन हालात में वो हैं, इससे तो अच्छा था वो शादी ही न करते। इस तरह अपने सिंगल हुड को अपनी उन्नति के लिए एक बड़ी उपलब्धि समझते हुए उसे एंज्वॉय करें। आप जो हैं, जैसे हैं, उसी में संतुष्ट रहें।

करियर पर फोकस करें

कॉलेज में अपने दोस्तों को अपनी पार्टनर के साथ खुश देखकर उनसे द्वेष करना सही नहीं है। हो सकता है वो सामान्य दोस्ती में हों, न कि एक दूसरे के गर्लफ्रेंड-ब्वॉयफ्रेंड हों। आप भी इस तरह किसी से दोस्ती करके उस दोस्ती को भी एंज्वॉय कर सकते हैं। जो टीनएजर अपने सिंगल हुड स्टेटस को लेकर परेशान होते हैं, उन्हें अपने करियर पर फोकस करने की ज्यादा जरूरत है। क्योंकि यही वह उम्र है, जब किसी से रिलेशनशिप में रहकर अपने जीवन में तनाव पालने की बजाय करियर पर फोकस करना भविष्य के लिए ज्यादा अच्छा होता है।

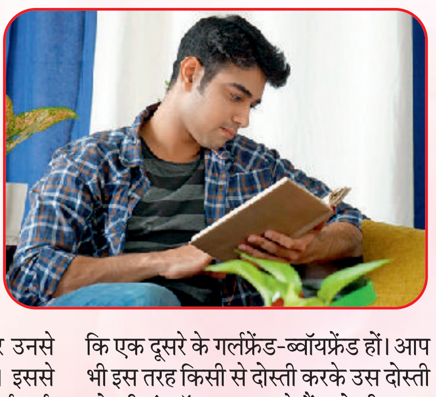

अकेले होने का गम कैसा

आजकल ऐसे तमाम ग्रुप और क्लब हैं, जहां सिंगल लोग एक-दूसरे के साथ को एंज्वॉय करते हैं। वे आपस में मिलकर पार्टी करते हैं या कहीं घूमने का प्रोग्राम बनाते हैं यानी सिंगल हुड कोई कमी होने का पर्याय नहीं है। आप अपने आपको किस रूप में देखना चाहते हैं, यह ज्यादा अहम है। हमें अपने आसपास ऐसे तमाम पुरुष और महिलाएं मिल जाएंगी, जिन्होंने अपने मन से सिंगल रहना चुना है। वे अकेले रहकर अपनी जिंदगी को बहुत ही अच्छे तरीके से जी रहे हैं। इसलिए सिंगल हुड के कई फायदे होते हैं, इसे भी समझें।

सोच समझकर बनाएं रिलेशन

आपके सर्कल में रहने वाले लड़के या लड़कियां अगर सभी किसी न किसी रिलेशनशिप में हैं और आप उनमें अकेले सिंगल हैं, तो अगर वे जबर्दस्ती आपको किसी के साथ रिलेशनशिप में आने, डेटिंग संबंधी सलाह देने या जबर्दस्ती किसी के साथ इनवॉल्व करने की कोशिश करें तो ऐसे लोगों से दूरी बना लें। क्योंकि सिंगल होने का मतलब किसी की दया का पात्र होने का नहीं है, जो लोग सिंगल होने को कमतर या बदकिस्मती समझ लेते हैं, उन्हें यह जता दें कि आप अपनी इच्छा से सिंगल हैं। किसी के साथ बुरे रिलेशनशिप में रहने से सिंगल होना आपको ज्यादा दिमागी सुकून देता है। प्यार का रिश्ता भले ही देर से बने लेकिन यह रिश्ता प्यारा, मजबूत और समझदारी से भरा होना चाहिए। *

सिने-ट्रेंड / अशोक जोशी

अपने आरंभिक काल से ही प्रेम आधारित कहानियों पर हिंदी फिल्में बनती रही हैं। बदलते समय और दर्शकों की पसंद के अनुसार ऐतिहासिक और लोकचर्चित प्रेम कहानियों का फिल्मी रूपांतरण होता रहा है। ऐसी ही कुछ चर्चित फिल्मों पर एक नजर।

फिल्मी पर्दे पर खूब दिखती रही हैं
ऐतिहासिक-लोकचर्चित प्रेमकथाएं

'आम्रपाली' में सुनील दत्त के साथ वैजयंती माला

'मुगल-ए-आजम' में दिलीप कुमार-मधुबाला

जब से हिंदी फिल्मों का निर्माण शुरू हुआ है, फिल्मकारों का सबसे प्रिय विषय प्रेम ही रहा है। अधिकांश फिल्मों में किसी न किसी रूप में प्रेम मौजूद रहता ही है। लेकिन कई ऐसी माइलस्टोन फिल्में भी बनी हैं, जो ऐतिहासिक या लोकचर्चित पात्रों की प्रेमकथाओं पर आधारित रही हैं। इनमें से कुछ के बारे में यहां बता रहे हैं।

खूब पसंद की गईं ऐतिहासिक प्रेम कहानियां

हमारे यहां ऐसे कई ऐतिहासिक पात्र हुए हैं, जिनकी प्रेमगाथाएं पर्दे पर ज्यादा सफल हुई हैं। इस क्रम में सबसे ज्यादा सफल फिल्म के. आसिफ की 'मुगले आजम' को माना जाता है। इस फिल्म में पृथ्वीराज कपूर ने अकबर, दिलीप कुमार ने सलीम और मधुबाला ने अनारकली की भूमिका में जान डाल दी थी। भव्य सेट, दिलचस्प संवाद और कर्णप्रिय गानों के बल पर यह फिल्म अब तक की सबसे ज्यादा सफल फिल्मों में शामिल है। इसी के आसपास बनी 'अनारकली' में प्रदीप कुमार और बीना राय ने अभिनय किया था। सी. रामचंद्र ने इसके लिए मधुर संगीत रचा था। यह फिल्म भी सफल रही। मुगलकाल के एक और प्रेम प्रसंग पर आधारित 1963 में बनी फिल्म 'ताजमहल' शाहजहां और मुमताज महल के प्रेम पर आधारित थी। इस रंगीन फिल्म की विशेषता रोशन का मधुर संगीत था। इसके गीत 'जो वादा किया वो निभाना पड़ेगा' और 'पांव छू लेने दो' आज भी बहुत पसंद किए जाते हैं। इसके बाद आशुतोष गोवारीकर ने फिल्म 'जोधा-अकबर' में अकबर और जोधाबाई की प्रेमकहानी को पर्दे पर उतारा। साठ और सत्तर के दशक में ऐतिहासिक प्रेम कथाओं पर आधारित जो श्वेत-श्याम फिल्में बनीं उनमें मांडू के अंतिम सुलतान बाज बहादुर और एक गड़रिया की गायिका बेटी रूपमती की प्रेमगाथा पर आधारित 1957 की फिल्म 'रानी रूपमती' में भारत भूषण और निरूपा राय ने मुख्य भूमिका निभाई थी। इसी तरह मगध के राजा चंद्रगुप्त और ग्रीस की हेलेना की युद्ध के बाद प्रेम में बदली कहानी पर 1959 में बनी फिल्म सम्राट 'चंद्रगुप्त' में भी भारत भूषण और निरूपा राय की जोड़ी थी। सन 1946 में पृथ्वीराज कपूर और मीना कुमारी अभिनीत फिल्म 'पृथ्वीराज संयोगिता' बनी थी। जो इनके प्रेम पर आधारित थी। वर्ष 2022 में यशराज फिल्म्स ने अक्षय कुमार-मानुषी छिल्लर अभिनीत फिल्म 'सम्राट पृथ्वीराज' का निर्माण किया था। रजिया सुल्तान और याकूत की प्रेम कहानी पर आधारित फिल्म 'रजिया सुल्तान' का दो बार निर्माण हुआ। 1961 में जयराज और निरूपा राय मुख्य भूमिकाओं में थे तो 1983 में बनी 'रजिया सुल्तान' को धर्मेंद्र और हेमामालिनी की जोड़ी के लिए जाना जाता है। मगध के राजा बिंबसार और वैशाली की नगरवधु आम्रपाली की प्रेम कहानी पर आधारित लेख टंडन की फिल्म 'आम्रपाली' में सुनील दत्त और वैजयंती माला ने मुख्य भूमिका निभाई थी। फिल्म के गाने कर्णप्रिय थे, इसके बावजूद यह फिल्म नहीं चली। इसी तरह ऐतिहासिक प्रेमकथाओं पर आधारित 'नूरजहां', 'यहूदी' भी नहीं चल पाईं। सन 1984 में रिलीज हुई हिंदी फिल्म 'उत्सव' प्राचीन संस्कृत नाटक 'मृच्छकटिकम' पर आधारित थी। इसमें वसंत सेना (रेखा) और एक गरीब ब्राह्मण चारुदत्त (शेखर सुमन) की प्रेम कहानी को दर्शाया गया। इसका निर्माण शशि कपूर ने और निर्देशन गिरीश कर्नाड ने किया था। हालिया बरसों में संजय लीला भंसाली की मराठा पेशवा बाजीराव और बुंदेलखंड की राजकुमारी मस्तानी की प्रेम कहानी पर आधारित 'बाजीराव मस्तानी' ने सफलता के झंडे गाड़ दिए थे।

लोक चर्चित प्रेम पर आधारित फिल्में

'लैला-मजनू', 'हीर-रांझा', 'सोहनी-महिवाल', 'शीरी-फरहाद' ऐसी लोक चर्चित प्रेम कहानियां हैं, जो सदियों से सुनी और सुनाई जाती रही हैं। इन पर बनी अधिकांश हिंदी फिल्में सफल रही हैं। इन कहानियों में 'लैला-मजनू' पर सबसे ज्यादा फिल्में बनी हैं। इनमें 1953 में बनी शम्मी कपूर और नूतन अभिनीत और उसके बाद 1973 में उनके भतीजे ऋषि कपूर और रंजीता अभिनीत 'लैला-मजनू' सबसे ज्यादा सफल रहीं। सन 1956 में बनी 'शीरी फरहाद' में प्रदीप कुमार और मधुबाला की भूमिकाएं थीं। लोक प्रेम कहानियों में पंजाब की माटी से जन्मी 'हीर-रांझा' और 'सोहनी-महिवाल' की प्रेम कहानियों पर सफल फिल्में बनी हैं। पहली फिल्म 1958 में बनी थी। इसमें भारत भूषण और निम्मी की भूमिकाएं थीं। इसके बाद 1984 में भारत और रूस के सहयोग से बनी 'सोहनी-महिवाल' का निर्देशन उमेश मेहरा ने किया था। इसमें सनी देओल और पूनम ढिल्लों के साथ जीनत अमान भी थीं। अनु मलिक के मधुर संगीत से रची यह फिल्म बेहद लोकप्रिय रही। राजस्थान की लोककथा पर आधारित फिल्म 'ढोला-मारू' भी सफल रही। लेकिन इन तमाम प्रेम कहानियों में 'हीर-रांझा' की प्रेम कहानी सबसे ज्यादा हिट हुई। 1970 में चेतन आनंद ने प्रिया राजवंश और राजकुमार को लेकर 'हीर रांझा' का निर्माण किया था।

कहने का सार है कि इतिहास, पुराणों और लोक संस्कृति में प्रसिद्ध प्रेमकथाओं पर फिल्मों का निर्माण हमेशा से होता रहा है। कुछ अपवादों को छोड़ दें तो इन्हें दर्शक खूब पसंद भी करते हैं। *